१·४३२
१६४०प

व्यवस्था



को

बदल डालो

हृदय नारायण

आजादी की मौत बेहतर है,
गुलामी की जिन्दगी से।

(नेपालके शहीदों की याद में)

व्यवस्था को बदल डालो



लेखक
हृदय नारायण



प्रकाशक
अशोक कुमार उपाध्याय
सर्लाही (नेपाल)

[मूल्य : २.५० पै०

यह सच है ।

❋ खून फिर भी खून है ।

❋ टपकेगा तो जम जायेगा,

❋ जुल्म फिर भी जुल्म है ।

❋ बढ़ेगा तो मिट जायेगा,

इसीलिये तो कहता हूँ ।

व्यवस्था को बदल डालो

लेखक— हृदय नारायण
पड़रिया (सर्लाही)

मुद्रक, श्री माधव मुद्रणालय, कर्णघण्टा, वाराणसी !

पात्र-पात्री की वेश भूषा

श्याम—साधारण धोती, कुर्ता

इन्सपेक्टर—इन्सपेक्टर का लिवास, पिस्तौल, पैर में जूता, मोजा

हवलदार—हवलदार का (यूनी फार्म) लिवास

शंभ—पैजामा, शर्ट

दिनेश—साधारण फूलपैन्ट, शर्ट कपड़े का जूता, मोजा

राम—साधारण धोती, कमीज

सुशील—धोती, कमीज, (या) कुर्ता

सलीम—बढ़ियाँ शर्ट, बेलबाटम पैन्ट

वकील—फूलपैन्ट, शर्ट, कोट, टाई

जीतू—फटा हुआ धोती, कुर्ता, अंगोछा

जग्गू—धोती, कमीज (या) कुर्ता, अंगोछा

एक पुलिस—पुलीस का लिवास

जज—फूलपैन्ट, शर्ट, कोट, टोपी, मोजा, जूता

प्रधान पंच—बढ़ियाँ धोती, कुर्ता (या) सर्ट गले में सोने की सिकड़ी हाफ जूता, और मोजा

महेश उपप्रधान पंच—बढ़ियाँ धोती, कुर्ता, जूता, मोजा

एक सदस्य—धोती, कमीज (या) कुर्ता, अंगोछा

रामू—पैजामा, कुर्ता, दाहीने हाथ में घड़ी गले में रूमाल

मुन्ना—फूलपैन्ट, शर्ट, हैट (टोप)

सि०डी०ओ०—फूलपैन्ट, शर्ट, जूता, मोजा, टोपी

साहूकार—सफेद धोती, कुर्ता (या) कमीज

नौजवान—पैजामा, शर्ट

एक मोटा सिपाही—सिपाही का लिवास हाथ में डन्डा

एक गरीब—साधारण धोती, कमीज, अंगोछा

दूसरा गरीब—साधारण धोती, कमीज, अंगोछा

तीसरा गरीब—साधारण धोती, कमीज, अंगोछा

एक बूढ़ा व्यक्ति—साधारण धोती, कमीज, अंगोछा

दुसरा बूढ़ा व्यक्ति—साधारण धोती, कमीज, अंगोछा

पंडित—आधी धोती पहनना और आधी ओढ़ना, पोथी, लोटा, एक छड़ी

शैलेन्द्र—बेलवाटम पैन्ट, शर्ट, जूता मोजा

क्रिमनल—हाफपैन्ट काला, काला शर्ट, काला चश्मा और काली पट्टी माथे में, दाहिने हाथ में बाल,

कलन—साधारण फूलपैन्ट, शर्ट

पात्री

नगीना—साधारण प्रिन्ट साड़ी, ब्लाउज

रंजीता—मटिया रंग की साड़ी, ब्लाउज

दिनेश की मां—बढ़िया सफेद साड़ी, ब्लाउज

दो शब्द

प्रिय विद्यार्थी, नवयुवक,

नया लेखक हृदय नारायण जयसवाल की सप्रेम भेंट।

वैसे तो आप कई ड्रामा खेले होंगे या देखे होंगे। अक्सर लोग दिल बहलाने के लिए ड्रामा खेलते हैं। सोचनीय बात यह है कि समस्या आज की है तो, समाधान आजही करना होगा। क्यों न हमलोग जनताको पर्दे पर स्पष्ट दिखा दें कि हम नेपाली के साथ यह पंचायती सरकार किस प्रकार जुल्म शोषण की है ईतना ही नहीं बेकसूर ईन्सानको घसिट घसिट कर पीटा, हत्यायें की साथ-साथ कितनी माँ, बहनोंकी इज्जतसे यह निर्दयी पंचायती सरकार ने रंग-बिरंगी होलियाँ खेली है। प्यारे भाइयों अगर ठीक ढंगसे यह जनमत संग्रह पंचायती सरकार न होने दे तो हर नौजवान, विद्यार्थी, वीर राम और लक्षमण, कामेश्वर, कुसेश्वर जैसा बन जायें। देखता हूं यह अत्याचारी पंचायती सरकार कितनेको जेल देती है कितने को गोली से उड़ाती है। डरता तो वह है जो बुजदिल और कायर हैं उन्हें घरमें चूड़ीयाँ पहनकर बैठ जाना चाहिए।

अपनी मातृभूमि की बुरी हालत देखकर जिस व्यक्ति को क्रोध की ज्वाला हृदयमें भड़क न उठे वह मनुष्य पशुके समान जीवित करते हुए मृतक के समान है। मैं शाही घोषणा का स्वागत करते हुए प्रत्येक प्रजातन्त्रवादीसे करबद्ध प्रार्थना करता हूं कि जनमत संग्रह ठीक ढंगसे करवावें तथा वहुदलीय प्रचार प्रसार में संलग्न हो जायें इतना ही नहीं अत्यधिक मात्रामें बहुदलीयको जितावें। विशेष भेंटमें। जय नेपाल।

व्यवस्था को बदल डालो

अंक प्रथम **दृश्य-प्रथम**

(स्थान—मैदान)

[श्याम एक सच्चा देश भक्त नौजवान है। वह गणेशपुर गाँव का है। पंचायत उसे खासुखाह परेशान कर रही है।]

(श्याम भाग रहा है। दायें पैरमें गोली लगी है। लंगड़ा रहा है। बायें हाथ में भी गोली लगी है। भाग रहा है फिर भी गोली लगे हुए हाथमें कपड़ा बाँधने की कोशीश कर रहा है। पुलिस के चार जवान एक इन्सपेक्टर जो पिस्तौल लिए हुआ है, एक हवलदार जो बंदूक सँभाले हुआ है। एक पुलिस के हाथ डंडा और एक पुलिस के हाथ चाबूक है। पुलिस पीछे-पीछे खदेड़ रही है। रुक जाओ, रुक जाओ की आवाज इन्सपेक्टर दे रहा है फिर भी श्याम भागते हुए किसी आड़में लुक जाता है, फिर भागता है। एक लकड़ी से टकराकर श्यामको गिरते ही पुलिस चारों तरफ से घेर लेती है। श्याम काफी थक गया है, हाँफ रहा है। साथ-साथ पुलिस भी थक गयी हैं तथा हांफ रही हैं।)

इन्सपेक्टर—(कड़ककर) अपने आपको बहादुर समझने वाला छोकरा, आखिर आ गये न पुलिस के हाथ।

श्याम—(उठते हुए होश में आकर) सिर्फ एक श्यामको पकड़कर बहादुर नहीं बन सकते इन्सपेक्टर। तुझे पता होना चाहिए इस मातृभूमिके बचाव के लिए लाखों श्याम पैदा ले चुके है। अगर तू रोटी और स्वतंत्रता इंसान से छिनता रहा तो, लाखों श्याम बलिदान होने पर तुल जायेंगे। पर रोटी और स्वतन्त्रता जीते जी कभी नहीं छिनने देगा।

हवलदार—(इन्सपेक्टर से) सर ! लातों के देवता बातों से नहीं मानते ।

इन्सपेक्टर—(एक पुलिस से) देखते क्या हो, इस देश द्रोही को बता दो कि नेपालका शासन क्या है ।

एक पुलिस—एस सर ! (श्यामके बदन पर कोड़े बरसाता है । श्याम गिर जाता है । श्याम के बेहोश होने पर इन्सपेक्टर के इशारे पर कोड़े मारना बन्द करता है । कमीज फट चुकी है, पीठ से तथा माथे से खून बह रहा है ।)

श्याम—इन्सपेक्टर, रुक क्यों गये, मार कोड़े, दिखा दे इन समाजों को, कि रोटी, अपना हक, अधिकार, फैसला, न्याय माँगने वाले इंसान के साथ कैसा सलूक किया जाता है । (गुस्सेमें) इन्सपेक्टर मेरे खूनकी प्रत्येक बूँद एक-एक साथीको पैदा करेगी । तुम जैसे पापी, अन्यायी, शासको को मारने के लिए । कान खोलकर सुन ले, पाप का घड़ा भर गया है । बहुत जल्द यह फूटने वाला है । (आह···· आह ···। उठने का उपक्रम करता है फिर गिर जाता है । कराहने लगता है । मुख से खून भी आ रहा है ।

इन्सपेक्टर—बकवास बन्द कर । नहीं तो तुझे पता है हीं कि इसी साल माघ ९ गते को जिस प्रकार दो देश द्रोही कप्तान यज्ञ बहादुर थापा और भीम नारायण श्रेष्ठको फांसी दी गयी है वही हाल तेरा भी होगा ।

श्याम—(क्रोध में) सुन लो मेरे समाज मेरे नेपाल वासी, जिसे यह देश द्रोही कहता है वो सच्चा देश भक्त था, जिसने नेपाल वासी के लिए रोटी माँगी, स्वतन्त्रता माँगी, हक माँगा, अधिकार माँगा, अन्यायी सरकारको बदलने की आवाज बुलन्द की उसे अर्ध रात्रि में गोली मार दी गयी । इस पंचायती सरकार ने सिर्फ दो ही इनाम दिया है मेरे भोले भाले निर्दोष नेपाली को गोली या जेल ।

इन्सपेक्टर— देश द्रोही को जेल नहीं तो होटल चाहिए क्या ?

श्याम—(आवेश में) यही है तेरी जेल न, जहाँ पानी के बदले पिशाब देते हो। यही है तेरी जेल, जहाँ खाना भी पशु जैसा देते हो। अन्यायी, बता यह किस देश का नियम है। वक्त आयगा तू, तेरे अन्यायी पंच उसी जेल में होगा, जहाँ मेरा सच्चा देश भक्त अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए पड़ा है।

इन्सपेक्टर—(हवलदार से क्रोध में) ले चलो इसे, इस बदमाश की सजा अब अदालत करेगी।

(हवलदार श्याम को हथकड़ी लगाता है तथा इन्सपेक्टर पुलिसके साथ अदालत ले जाता है।)

(पटाक्षेप)

अंक-प्रथम **दृश्य-दूसरा**

(**स्थान**—कोर्ट। न्यायधीश बैठा है। कोर्ट में अन्य लोगों के साथ श्याम का बड़ा भाईराम अपनी माँ रंजिता के साथ बैठा हैं। दायीं बगल राम से छोटा भाई सुशील तथा शम्भू जो सबसे छोटा भाई है बैठा है। वकील श्याम से खड़ा होकर बयान ले रहा है।)

वकील— (श्याम से) मिस्टर श्याम। गणेशपुर पंचायत में तुमने जनता को सरकारके बिरुद्ध भड़काया और भद्दी-भद्दी गालियोंके साथ-साथ इन्कलाब का नारा भी लगाया ?

श्याम —यह सच है।

वकील—(जज से) माई लार्ड। नोट किया जाय। हाँ तो भी श्याम, यह भी सच है कि तुमने शहरी कार्यालय, जिला कार्यालय, और प्रशासन कार्यालय को क्षति दिलाने की धमकी दी है।

श्याम—(जजसे) माई लार्ड। यह सब झूठ है।

वकील—(क्रोधमें) तो मि० श्याम। सच क्या है ?

श्याम—माई लार्ड। सच यह है कि मेरे गाँवमें एक अपाहिज इन्सान के साथ एक सेठ ने जुर्म किया। यानी कर्ज वसूल लेने के बावजूद भी उस गरीबका घर उजाड़ने पर तुला हुआ था। उससे गाँव पंचायत दो सौ रुपया रिश्वत लेकर उसकी मद्दत करने का दावा दिया। मैंने उन अन्यायी, अत्याचारी पंचों के विरुद्ध आवाज उठाई और कहा, पंच जी, यह सब जुर्म है। अन्याय है। सुनते हीं वो लोग आग बबूला हो गये और मुझे पुलिस द्वारा देश द्रोही कहकर पकड़वा दिया। क्या यह जुर्म नहीं माई लार्ड। क्या यही इन्साफ है मेरी मातृभूमि का ?

वकील—(जजसे) माई लार्ड। मैं अदालत से दरख्वास्त करूँगा कि मुजरिम श्याम अपना गवाह, या कोई साबूत अदालत में पेश करें।

श्याम—(वकील से) वकील साहब। एक वे सहारा इन्सान का गवाह एक ही हो सकता है। मातृभूमि, दूसरा है हीं क्या ?

वकिल—(जजसे) माई लार्ड। यह सब बकवास है। इसके पास कोई गवाह, कोई साबूत नहीं।

जज—(श्यामसे) मि० श्याम। तूझे अपनी बात की सफाई में कुछ कहना है ?

श्याम—(जजसे) यही तो वक्त है कहने का। मेरे नेपालके क्रूर शासक, अन्यायी शासक, भ्रष्टाचारी शासक अपने आपको समझ लें कि शहीदोंका खून कभी भी बेकार नहीं गया है। इसका गवाह नेपाल का इतिहास है। जिस प्रकार इन पंचोंने, मेरे देशके भोली-भाली जनता की आँखों में धूल झोंक कर माल पोत, आयकर, जग्गा विकासकर, बालमन्दिर तथा चक्र वृद्धि व्याज लेकर जनताका

शोषण करके अपनी तिजोरियाँ भरा है। एक रोज इन सबोंसे हिसाब लूँगा। उन शहीदों का सपना अवश्य पूरा करुँगा। जिसे ये अन्यायी सरकार वे मौत मारी है। माईलार्ड। आप उस माँ को क्या जबाब देंगे, जिस माँ की गोद सूनी हो गयी है। उसे क्या जबाब देंगे, जो बहन राखी लिए अपने भाईका इन्तजार कर रही है। (कड़ककर) आप उसे क्या जबाब देंगे जिस औरत का सिंदूर फीका पड़ गया है।

(सारे कोर्ट में हलचल पैदा हो जाती है)

जज—(क्रोधमें) आर्डर-आर्डर। मि० श्याम। यह अदालत है, कोई गाँव या आम सभा नहीं जो जी में आया, बक दिया। किसी व्यवस्थाव के विरुद्ध आवाज अदालत बर्दाश्त नहीं कर सकती।

श्याम –(जज से) माईलार्ड। आपने सच ही कहा है। अदालत ता सिर्फ बेकसूर इन्सान, जो रोटी; न्याय, स्वतन्त्रता के लिए माँग करता है उसे फाँसी या जेल देती है। यही है न आपकी अदालत। मैंने सच्ची बात आपकी अदालत में उगल दी तो अनुशासन के विरुद्ध है और आपकी सरकार वो रंग रेलियाँ मनाया करती हैं, जो जनता का पैसा रहता है पंचायती सरकार मेरे इस गरीब देश को डूबा डाला। आज इस भरी कोटं में पूछना चाहता हूं कि जिस [illegible] मालिक ही शराबी, जुआड़ी और चरित्रहीन हों, उस घर-परिवार को क्या दशा होगी। वैसे हीं जनता जिस प्रतिनिधि को चुनकर भेंजते हैं वो सिर्फ स्वार्थ की भावनाओं में पड़कर डूब जाता है और वही शराब, जुआ, चरित्रहोनता तथा शोषण करना शुरु कर देता है तो मेरे देश का भी वही हाल होता है, जो परिवार का हुआ।

जज—आर्डर-आर्डर। अदालत मि० श्याम को सरकार के विरुद्ध और

आम जनता को भड़काने के जुर्म में ६ महीने की सख्त सजा देती है।

श्याम—(जज से) माईलार्ड। जिस प्रकार पंचायत के झूठे काले कारनामों से मुझे सजा मिली है। फैसला जनता करेगी। बहुत जल्द जनता का अधिकार आ रहा है।

(फैसला होते ही श्याम की माँ रंजीता उठ जाती है)

रंजीता—(आँखों में आँसू) नहीं, नहीं, जज साहब। मेरा लड़का निर्दोष है। इसे छोड़ दिया जाय। सजा कसूर को दिया जाता है। बेकसूर को नहीं।

राम—(उठते हुए) माँ (बैठाने की कोशिश करता है)

शंभू—(उठकर क्रोधपूर्ण आवाज में चीखते हुए) माँ, यह तुम क्या कर रही हो? श्याम भैया जैसे सच्चे देश भक्त मेरे नेपाल में पैदा होते ही रहेगें। देखता हूं, यह अन्यायी सरकार कितने को जेल देती है।

जज—(क्रोध में) आर्डर–आर्डर। नानसेन्स ब्वाय, यू कैन नौट स्पीक इन दिस कोर्ट।

शंभू—(मूड में) माईलार्ड। आइ आलसो अन्डर स्टैन्ड एवाइट यू।

(जज खड़ा हो जाता है। वकील अपनी फाइल वगैरह लिए हुए कोर्ट के अन्य लोगों के साथ चल रहा है। श्याम को पुलिस हथकड़ी लगाए हुए जेल लिए जा रही है। श्याम की माँ के आँखों से आँसू की धारा बह रही है। श्याम माँ के करीब आने पर माँ का पैर छूता है। राम श्याम से गले मिलकर फूट-फूटकर रोता है। सुशील तथा शंभू जो श्याम से छोटा है श्याम का पैर छूता है।)

(पटाक्षेप)



अंक प्रथम **दृश्य तीसरा**

(स्थान— गणेसपुर गाँव। प्रधानपंच के साथ सदस्यगण पंचायत में बैठे है। महेश भी बैठा है। शराब की घूंट पंचायत में चल रही है। श्याम की कैद की खुशी में प्र० पं० झूमते हुए कह रहा है।)

प्रधानपंच— (महेश से) महेश बाबू यहाँ के वातावरण को श्याम तो क्या, कोई भी नौजवान पा नहीं सकता।

महेश— आपने ठीक हीं कहा है प्र० पंच जी। ये बदमाश अपने आपको देशभक्त समझने वाले, आखिर पंचायत को समझते हीं क्या है ?

एक सदस्य— महेश बाबू, मुझे खबर मिली है कि हमलोगों के विरुद्ध श्याम का भाई शंभू आवाज निकाल रहा है।

प्रधानपंच—सदस्य जी। एक ऐसी चाल चलनी चाहिए जिससे इस श्याम के परिवार में फूट हो जाय।

महेश— प्र० पंचजी। इससे फायदा क़्या होगा ?

प्रधानपंच—बहुत बड़ा फायदा होगा। राम सीधा-साधा आदमी है। उसके परिवार में फुट डालकर उसके घर से राम को अलग कर देंगे और अपनी पार्टी में सम्मिलित कर लेगें।

एकसदस्य—लेकिन प्रधान पंचजी। राम को बहकाना आसान बात नहीं।

प्रधानपंच— देखिए सदस्य जी। अपना जो रामू है न बस उसका काम ही यहीं है। आप लोग देखते रहें। तीर ठीक निशाने पर लगेगा। (इतने में नगीना पानी गागर में लिए जा रही है। पंच लोगों की निगाह नगीना पर है। सब के सब नशे में वाह-वाह की तालियाँ देते है।)

प्रधानपंच— (नगीना से नशे में) कौन ? नगीना, तुम्हारे पिताजी कहाँ हैं ?

नगीना—क्या बात है गंगा चाचा जी। कल ही तो आप उनसे मिले हुए थे।

प्रधानपंच—(बात पलटते हुए नशे में) अरी नगीना, सच पूछ तो काम तुमसे है।

नगीना—(कड़े स्वर में) क्या काम है ?

महेश—(शराब की घूँट मुख से हटाकर) प्यासों को चाहिए क्या ?

नगीना—(गगरा रखकर ग्लास में पानी डालकर) लिजिए।

एक सदस्य—(नशे में) लो आखिर गाँव की ही भोली-भाली लड़की ठहरी। कुछ बात भी नहीं समझती।

नगीना—(क्रोध में ग्लास का पानी सदस्य के मुँह पर फेंक कर) कान खोलकर सुनलो, अगर तुम लोगों को इज्जत और जान प्यारी है तो आइन्दा गाँव को किसी भी लड़की को छेड़ने की कोशिश की तो ?........

प्रधान पंच—(नशे में) नगीना। अगर कुछ कह ही दिया तो बुरा मत मानो।

नगीना—(आगे बढ़ते हुए क्रोध में) तो सुनलो गंगारामजी। तुम जेसे कुत्ते की सजा मेरा भाई दिनेश देगा जो कल कालेज से आ रहा है।

महेश—(हँसते हुए नशे में) हा.......हा.......हा.......सजा। (फिर सब हँसते है) अरे. पंचायत जिसे चाहे सजा दिलवा सकती है। दूसरों की हिम्मत ही क्या है, जो पंचायत के लोगों के ऊपर धाक दिखाये।

नगीना—(गुस्से में) ठीक है। कल देख लेना।

(नगीना का प्रस्थान)

(पटाक्षेप)



अंक प्रथम **दृश्य चौथा**

(राम जंगल से लकड़ी काटकर माथे पर लिए आ रहा है, साथ में कुल्हाड़ी भी हैं। रास्ते में रामू पहुंच जाता है जो पंच लोगों का दलाल है।)

रामू—(मीठे स्वर में) अरे राम भाई, शरीर के ऊपर भी कुछ ध्यान दो। इतनी कड़ी धूप है। नीचे धरती भी कितनी गर्म हो चुकी है। (लात पटकते हुए) पैर में छाले पड़ गये होंगे। अरे भाई शरीर ही धन है।

राम—(कुछ सोचकर) आखिर, तुम कहना क्या चाहते हो ?

रामू—(मूँह बनाकर) लो, वुजुर्ग लोगों ने ठीक ही कहा है, भैंस के आगे बीन बजाय, भैंस रहे पगुराई। मतलब कुछ समझे ? नहीं समझे ? क्या ? तुम्हारे और भाई यह जलावन ला नहीं सकते ? जो सिर्फ तू ही इतना कड़ा परिश्रम करता है।

राम - (क्रोध में) देख रामू। मैं अपने परिवार के विषय में ऐसी, वैसी फिजूल बातें नहीं सुनना चाहता। समझे ?

रामू—अरे भाई, तुम बिगड़ते क्यों हो। क्या, मैं अपनी भलाई के लिए कह रहा हूँ। देख भाई तूँ मेरा एक सच्चा साथी है। मैंने अपना फर्ज समझ कह दिया। अब तुम जानो तेरा काम जाने।

राम—(लकड़ी रखकर बैठते हुए) रामू भाई। कहा तो तुमने ठीक है। लेकिन मैं क्या करूँ। श्याम जब से जेल में पड़ा है, घर में मेरे सिवा कोई काम ही नहीं करता। अब रही शंभू की बात। खैर वो तो पढ़ ही रहा है।

रामू- (पीठपर हाथ रखकर) राम। तूँ एक काम करेगा ?

राम —क्या ब[illegible] ?

रामू– घनश्याम, सुशील को स्पष्ट कह दो कि अब मैं अकेले काम नहीं देखूँगा ।

राम– अगर माँ पूछेगी, क्यों ? तो मैं जवाब क्या दूँगा ।

रामू—(मुँह बनाते हुए) राई को पर्वत बना रहा है तू। अरे भाई डरने से पटिदारी नहीं होती। पटिदारी करने के लिए कलेजा होना चाहिए । कलेजा । कुछ समझे ।

राम—(सोंचकर) अब मैं समझ गया । वास्तवक में मेरे लिए घर में बहुत बड़ा अन्याय था । ठीक कहा तुमने ऐसा ही करूँगा । (राम लकड़ी उठाता है)

(दोनों का प्रस्थान)

(पटाक्षेप)

अंक प्रथम **दृश्य पाचवां**

(स्थान– (हवेली) रंजीता खाट पर लेटी है । सुशील माँ को दवा पिला रही है । राम लकड़ी माथे पर लिए हुए घर में पहुंचता है । लकड़ी रखने की आवाज सुनते ही रंजीता धीमे स्वर में कहती है । (राम लकड़ी रखकर एक तरफ बैठ जाता है)

रंजीता—(शुशील से) बेटा सुशील, क्या ? राम तो रहा है ।

सुशील—हाँ माँ, बड़े भैया है । जंगल से जलावन लेकर आये हैं ।

रंजीता– (सर उठाते हुए) कहाँ हो मेरे राम । बहुत ही थक गया होगा (राम मौन रूप हुए एक तरफ बैठा है)

रंजीता— सुशील बेटा, जरा राम को बुलाना ।

सुशील—भैया । माँ बुला रही है आपको ।

(राम मन-मुटाव पूर्वक माँ के सामने जाता 

राम—(उबकर) क्या है माँ ?

रंजीता— आज तुम्हें हो क्या गया है। कई बार पुकारा फिर भी नह
आ रहा था, बात क्या है बेटा।

राम— कोई बात नहीं।

रंजीता—(धीमे स्वर में) जरूर कोई बात है जो तू कहने से डरत
है। तुझे कहना ही पड़ेगा।

राम—(मुँह बनाकर) कल से मेरा खाना अलग होगा। मैं पूरे परिवा
के साथ न रहूँगा।

सुशील— (चौंककर) भैया, देखते नहीं, मा मृत्यु सय्या पर पड़ी है। क्य
गुजरेगी इनके दिलपर।

राम— (कड़ककर) चुप रहो सुशील। मैं जो चाहूँगा सो ही होगा।

रंजीता— (चीखकर) क्या बकते हो राम। होश में तो हो।

राम—माँ, मैं बिल्कुल होश में हूँ। अब मेरे फैसले को कोई नहीं बद
सकता।

रंजीता—(नम्रता से) राम बेटा, अपने गरीब परिवार के ऊपर कुछ
खयाल कर। तुम्हारे छोटे भाई सब अभी नादान हैं, ना समझ
उसे अच्छे रास्ते पर लाना तेरा फर्ज है। कुछ ही दिनों में श्या
जेल से छूटकर आ ही जाएगा।

(शंभू का प्रवेश। स्कूल से आ रहा है साथ में किताबें भी है
किताब एक मेज पर रखकर माँ के पैर के सामने बैठ जाता है)

शंभू—माँ, तुम कैसी हो। डाक्टर साहब आये थे कि नहीं।

सुशील— हाँ शंभू। डा० साहब आये थे। माँ दवा खा रही है उम्मीद
माँ बहुत जल्द ठीक हो जायेगी।

शंभू—(राम से) भैया। आप काफी परेशान जैसे दिखाई देते हैं। क
बात है।



राम—कुछ नहीं ।

शंभू—छुपाइए मत भैया । जरूर कोई बात है । (माँ से) माँ तुम्हीं कुछ बताओ न । आखिर क्या बात है ।

रंजीता—राम परिवार से अलग रहना चाहता है ।

शंभू-(चीखकर) नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता । मेरे भैया ऐसा नहीं कर सकते हैं ।

राम-हाँ शंभू, माँ ठीक कहती है । कल से मेरा खाना अलग बनेगा ।

शंभू—(क्रोध में) भैया । अब मैं समझा कि आप क्यों ऐसा सोच रहें हैं ।

राम—क्यों सोच रहा हूँ ।

शंभू—भैया, आपको किसी ने बहका दिया है । यह ठीक नहीं है ।

राम—(क्रोध में) खबरदार जो ऐसी बात जुबान पर लाया ।

सुशील—(शंभू से) शंभू, तुम चुप रहो ।

रंजीता—(राम से) राम बेटा, मेरी एक बात का हमेंशा खयाल रखना । जिस कार्य के लिए दिल और दिमाग जाय पर आतमा नहीं जाय वह कार्य नहीं करना चाहिए । क्यों कि गलत कार्य करने के लिए आतमा सलाह ही नहीं दे सकती । क्या, तुम्हारी आतमा सलाह देती है। अलग रहने के लिए ।

राम-माँ । मैं सोच समझकर यह कदम उठाया हूँ । यह मेरा आखिरी फैसला है ।

रंजीता—(रामसे) तो ठीक है । जब तेरा आखिरी फैसला यही है तो ....(कहते-कहते बेहोश हो जाती है सबके सब माँ के नजदीक दौड़ते हुए संभालता है पर राम वहाँसे चला जाता है ।

(पटाक्षेप)



अंक-प्रथम **दृश्य-छठा**

(स्थान—पंचायत, प्रधान पंच, महेश, सदस्यगण बैठे है राम भी बैठा है।)

प्रधान पंच—हाँ तो राम, तुम क्या कह रहे थे।

राम-पंधान पंचजी। मैं परिवार से अलग रहकर अपना जीवन व्यतीत करना चाहता हूँ पंचायत करके मेरा जो हक हिस्सा है वो परिवारसे दिलवा दिजिए।

महेश—प्रधान पंचजी रामका सोचा बिल्कुल सही है।

सदस्य—हाँ राम। वास्तव में ऐसे निकम्मे परिवार से तो अलग रहकर जीवन व्यतीत करना अच्छा है।

प्रधान पंच—राम, वास्तव में कैसी अजीब दुनिया होती जा रही है। देख तू कमाता है। सारा परिवार ऐश व आराम से रहता है।

महेश—बस देर किस बात की।

(इतनेमें शंभूका प्रवेश)

शंभू—(क्रोधमें) देर है महेश जी क्या ? जनता आप पंच लोगों को इसलिए पंच चुनती है कि घर-घरमें भाई-भाईको अलग करवा दें। प्रेम के बदले घृणा उत्पन्न करवा दें।

प्रधान पंच—लेकिन ऐसा करवाने से पंच लोगों को क्या फायदा है ?

शंभू—ताकि हमेशा पंच लोगों की खुशामद करते रहें साथ-साथ रिश्वत भी मिलता रहे।

राम—(क्रोध में) शंभू, तुम चुप रहो।

शंभू—भैया, बड़े भाई पिता समान होते हैं। अगर हम परिवार वालों से कोई गलत हो गयी हों तो घर में ही सजा दीजिए। इन दलाल, अन्यायी पंच लोगों से भरी जनता की कोई आवश्यकता नहीं।

प्रधान पंच—(राम से क्रोध में) राम, अगर खैरियत चाहते हो तो तुम अपने नेता को बकवास बन्द करने को कह दो। छोटी मुँह बड़ी बातें बनाने चला है।

शंभू—प्रधान पंचजी। आप यह भूल जायें। पंच लोगों की चाल जनता समझ चुकी हैं। समझे।

राम—(शंभूको थप्पड़ मारते हुए) बेवकूफ। मेरे सामने तुझे बोलने की हिम्मत कैसे हुई।

शंभू—(गाल सहलाते हुए) भैया। आप पर इन हरामजादे पंचों का असर पड़ गया है। आपको माँ की बात न मानने का पश्चाताप करना पडेगा।

राम—आज का छोकरा, मुझे चला है सिखाने। मैं कहता हूं चला जा यहाँसे। (कड़ककर) मेरी नजरों से दूर हो जा।

शंभू—ठीक है, मैं जा रहा हूं। पर खयाल रखिए, एक रोज आप इन्हीं पंचोंसे रोटी की भीख माँगेंगे, पर दिखाकर भी छिन लेगा।

(शंभू का प्रस्थान)

(राम सोचने लगता है)

प्रधान पंच—(हाथ पकड़कर) राम। मैं जानता हूं। शंभू अभी पढ़ रहा है। वह ना समझ है। उसकी बातों का मैं बूरा नहीं मानूँगा।

राम—प्रधान पंचजी। कहीं आप लोगों ने मेरा साथ छोड़ दिया तो ?

प्रधान पंच - छि, छि, छि, कैसी बातें करते हो राम। तुमने पंच लोगों को समझा हीं क्या है। जो कहते हैं, वो करके दिखाते हैं।

महेश—(राम से) राम, वक्तको आने दो, हम लोग तुम्हारे लिए जान भी दे सकते हैं।

(पटाक्षेप)

●

अंक-दूसरा **दृश्य-प्रथम**

(जग्गू का लड़का दिनेश कॉलेज से आया है रक्षा बन्धन का दिन है। आने के शुभ उपलक्ष में दिनेश की बहन नगीना भाईको आरती उतार रही है। माँ एक तरफ चावल बुन रही है। जग्गू चटाई बिन रहा है (गाना) समाप्त होते ही नगीना भाई को राखी बाँधना चाहती है।)

नगीना—भैया, लाओ हाथ बढ़ाओ। आज रक्षा बन्धन है।

दिनेश—(आँखों से आँसू निकलता है। हाथ बढ़ाते हुए) लो बाँध दो राखी। आज रक्षा बन्धन है न।

नगीना—(दिनेश की आँखों में आँसू देखते ही राखी बाँधने से रूक जाती है) पहले तुम यह बताओ भैया, तेरे आँखों में आँसू कैसा ?

दिनेश—क्या करोगी सुनकर बड़ी दर्दनाक कहानी है। ले राखी बांध।

नगीना—भैया, तुम्हें तो कहना ही होगा।

दिनेश—तो सुनो। आज से साल भर पहले मैं अपने दोस्त के घरमें गया था। साथियों की बहनें ऐसी ही खुशी से रक्षा बन्धनके रोज नाचती हुई राखी बांधी थी। (गला भर आता है, आँसू गिरने लगता है)

नगीना—रुक क्यों गये भैया, कहो न बात क्या है ?

दिनेश—आज वो बहनें राखी लिए भाई का इन्तजार करती होगी पर उसके भाइयों को यह क्रूर शासक जिन्दा चबा डाला। बेमौत मारा गया।

जग्गू—(दिनेश से) लेकिन ऐसा हुआ क्यों ?



दिनेश—साथियों ने अपने पढ़ाई की त्रुटी में अपनी मांगकी उसका परिणाम यह मिला की तीन मंजिला मकान से कितने लड़के को ढकेल दिया गया। कितने का बन्दूक की कुन्दो से सर कुचल डाला। (सिसक-सिसक कर रोने लगता है।)

दिनेशकी माँ—बेटा, तुम भली भाँति आ गये. यह माँ दुर्गे की कृपा ही तो हैं।

दिनेश—(आँसू पोछते हुए) माँ, तुम कैसी बातें करती हो, मैं उस साथी की माँ को क्या जबाब दूँ। जिसके लाडले को इन हत्यारों ने मार डाला। काश। मुझे भी यह मातृभूमि शहीद कर लेतो।

जग्गू—(धिमे स्वर में) नहीं बेटा, ऐसा मत कह। मेरे तो तुम एक ही चिराग हो। अगर तुम इस दुनिया में नहीं रहे तो मैं कहीं का न रह सकूँगा।

नगीना—(आँसू पोछते हुए) पिताजी। भैया ठीक कहते हैं। जरा खुदि ही सोचिये, कि उस पिता और माँ पर क्या गुजरता होगा, जिसके पास पुत्र के सिवाय कोई और रास्ता न हो। यह बहुत बड़ा अन्याय है। भैया एक बात मैं तुमसे कहना भूल ही गयी थी। (सर झुका लेती है)

दिनेश—(घबड़ाकर) क्या बात है, तू खामोश क्यों हो गया।

नगीना—भैया, प्रधान पंच गंगाराम, उपप्रधान पंच महेश और सदस्य-गण वैठे हुए था""मैं पानी गगरा में लिए आ रही थी तो""।

दिनेश—(क्रोधमें) तो क्या हुआ ? डरमत साफ-साफ कह दे कि बात क्या है ?

नगीना—मुझ छेड़ा।

दिनेश—तुमने क्या जबाब दिया।

नगीना—(मुँह बनाते हुए क्रोध में) मैंने भी उन कमीनों को स्पष्ट कह दिया की सुनलो गंगाराम तथा महेश, तुम सबकी सजा मैं अपने भाइ से दिलवाऊँगी। और यह भी कहा कि अगर आइन्दा कभी भी गाँव की भोली-भाली लड़की को छेड़ने की कोशिश की तो सजा तुम सबों को कुत्तों की मौत मिलेगी।

दिनेश—(क्रोध में) मैं उन हराम जादों को तड़पा-तड़पा कर मारूँगा।

(जाने की कोशिश करता है पर माँ आगे आकर रोक लेती है।)

दिनेश की माँ—(हाथ पकड़कर) नहीं बेटा, मैं तुम्हें उनलोंगों से टकराने कभी नहीं दूँगी। तुझे पता होना चाहिए कि श्याम को देश द्रोही कहकर जेल में रखवा दिया है।

जग्गू—बेटा, जब से श्याम जेल में गया है तब से वही प्रधान पंचजी, सदस्य गण सबने मिलकर श्याम के वड़े भाई को बहका कर घर फोड़ डाला। इतना ही नहीं शंभू श्याम के जैसा ही देश भक्त है उस पर राम द्वारा थप्पड़ भी लगवाया।

दिनेश—पिताजी। हिम्मते मद्दता, मद्दते खुदा, वह भी क्या इन्सान है जिसके पास अपना हक, अधिकार, न्याय, इज्जत के लिए हिम्मत न हो। उस मनुष्य को चूड़ियाँ पहन कर घर में बेठना चाहिए। दूसरे मुल्क में जाकर देखें औरतों की भी हिम्मत क्या है? और एक मेरा देश है जहाँ मूठ्ठी भर के लोग जनता पर जुल्म, अत्याचार ढाये हुआ हैं पर जनता डर से कुछ नहीं कर पाती। छि....छि ...
(मुन्ना एक छोटा सा बच्चा जिसकी सात साल की उम्र है घबड़ाया हुआ आता हैं)

मुन्ना—(तुतलाहट आवाज में) दिनेश भईया। जोतू चाचा को पुलिस बहुत जो[illegible] मार दे रही है।

दिनेश—मुन्ना हुआ क्या ?

मुन्ना – (तोतलाहट आवाज़ में) भैया, (इशारा करके) वो गंगाराम चाचा है न, उन्होंने पुलिस को कुछ कहा ?

दिनेश – क्या कहा ?

मुन्ना—कहा, कि यह जीत्तू है न पंचायत के ऊपर धाक दिखाता है।

दिनेश—फिर क्या हुआ ?

मुन्ना— लो फिर क्या हुआ। पिटाई शुरू हो गयी। माथे से खून भी बह रहा है।

(दिनेश मुन्ना के साथ प्रस्थान)

(पटाक्षेप)

अंक दूसरा **दृश्य दूसरा**

(प्रधान पंच तथा सदस्य गण बैठे है। गाँव के कुछ लोग इकट्ठे हो गये हैं। पुलिस का कोड़ा जीतू पर बरस रहा है। पंच लोग मुस्कुरा रहे है)

[दिनेश का मुन्ना के साथ प्रवेश। पहुँचते ही दिनेश पिछे से कोड़ा पकड़ लेता है।]

दिनेश—(कोड़ा पकड़े हुए) रूक जाओ, ये भी तेरे जैसे ही इन्सान हैं, आदमी हैं। जानवर नहीं जो इस प्रकार पीटते हो। अगर इनसे कोई गलती हो गयी हों तो ये कानूनी तौर पर सजा के भागी हैं।

(पंचलोग क्रोध पूर्ण खड़े हो जाते है।)

प्र० पं०—ऐ लड़के यह पंचातत का मामला है। इसमें दखल देने का अन्जाम बहुत बुरा होगा।



सदस्य गण—प्रधान पंचजी ठीक ही तो कह रहे हैं।

पुलिस—नौजवान ! पंचायत की देखभाल करना मेरा फर्ज है।

दिनेश—(मुँह बनाते हुए क्रोध में) बहुत बड़ा फर्ज। सिर्फ पंचों के इशारे पर नाचने का फर्ज। कुछ पूछताछ इन गाँव वालों से किया कि इनका दोष क्या है ?

पुलिस—आखिर पंच लोग भी जनता द्वारा ही चुने गये हैं।

दिनेश—पंचायत की सम्पत्ति, अधिकार को तो पंच लोग ने निजी सम्पत्ति, अधिकार ही समझ लिया है। मैं जानना चाहता कि जीतू चाचाजी का कसूर क्या है ?

प्रधान पंच—इसने जानबूझ कर मेरे खेत में लगी फसल को अपने पशु से चरा डाला और जब मेरा नौकर इसे पशु बाँधने के लिए समझाने गया तो उल्टे उस पर टूट पड़ा। यहाँ तक कि उसे बुरी तरह पीटा भी।

दिनेश—(जीतू का हाथ पकड़े उठाते हुए) क्या बात है जीतू चाचा सच-सच बोलिए।

जितू—(थरथराते हुए। गला भर आता है) दिनेश बेटा, बिमल की मां कल खेत से लौट रही थी ··· तो इन पंचों ने कुछ शरारत करना चाहा······परन्तु ·······।

दिनेश—(क्रोध होकर) फिर क्या हुआ ?

जीतू—होगा क्या ? उसने महेश को एक थप्पड़ मारा और कहा कमीना, देख लूँगी तुम सबको भी। इसी बातको लेकर उसने अपने ही पशु से अपने खेत की लगी हुई फसल नष्ट करवाया और यह एक ढोंग रचकर मुझे पुलिस द्वारा सजा दिलवा रहा है। (रोने लगता है। आँखों से धारा-प्रवाह आँसू गिरने लगता है)



एक सदस्य—(गुस्सेमें) यह जाल फरेवाँ आदमी है। भला पंच लोग ऐसा ढंग रच सकते हैं ?

दिनेश—(आग बबूला होकर सदस्य का कालर पकड़कर) बदतमीज ! जाली तो तुम सब हो। अपनेको रावण समझने वाले। कान खोलकर सुनले, राम मेरी मातृभूमि पर पैदा ले चुके है। तुम जैसे अन्यायी, अत्याचारी राक्षसों को मारने के लिए।

पुलिस—अपनी जुबान पर लगाम दो नौजवान। वरना तुम्हें भी ...।

दिनेश – रूक क्यों गये। तानाशाही अव नहीं चलेगी। वक्तसे डरो। अब तेरी तानाशाही हम जनता सहने को तैयार नहीं हैं।

पुलिस—(पिस्तौल निकालकर तानते हुए) अगर तानाशाही का नाम जुबान से निकाला तो सजा मौत होगी।

दिनेश - अन्यायी, अत्याचारी, तेरा फर्ज अदालत में ल जानेका है। जेल देने का है। किसी बेकसूर इन्सान पे जूल्म ढाने के लिए नहीं। इन अन्यायी पंचोंका साथ देने वाले तानाशाही शासन अब तेरा अन्त होगा ही।

पुलिस—प्र० पंचजी ! देखते क्या हैं ? इसे पकड़ कर पंचायत में ले चलिए।

(इतनेमें शंभू धीरेसे पहुंच जाता है, पिस्तौल छुपाए हुआ है)

शंभू—(पीछे से पिस्तौल पुलिस के पीठ पर) हैन्डसप ! (पुलिस हाथ ऊपर उठाती है। शंभू पिस्तौल छिन लेता है)

दिनेश—शंभू। जरा होश संभालना।

शंभू – नहीं दिनेश भैया। अब जुल्म बर्दास्त नहीं कर सकता। बन्दूक का जबाब बन्दूक से दूँगा। इंट का जबाब पत्थर से दूंगा। अगर इसने एक थप्पड़ मारनेकी कोशिस की तो इसे दो थ[illegible]मारूँगा !

दिनेश—(क्रोधमें) शंभू ! मैं कहता हूं रुक जा। गोली चलाने की कोशिस मत कर !

शंभू—(गुस्सेमें आग बबूला होकर) दिनेश भैया, मैं गणेशपुर पंचायत-बासीसे पूछना चाहता हूँ कि क्या, मेरा श्याम भैया निर्दोष नहीं था ? क्या जुल्म किया था श्याम भैया ने ? रोटी माँगा, उसके बदले कोड़ा मिला। न्याय, अधिकार, स्वतन्त्रता माँगा, तो जेलकी चार दिवारी में दम तोड़ने की सजा मिली। क्या यही है न्याय मेरी मातृभूमि का ? यहाँ न्याय के बदले अन्याय हो रहा है। गरीब निर्दोष जीतू चाचा जी के ऊपर किया गया जुल्मोंका बदला एक-एक से गिनकर लूँगा। चाहे मेरी हाथ खून से क्यों न रंगना पड़े।

प्रधान पंच—सुनलो गाँववालों, यह आजका छोकरा, पंचायत के विरुद्ध बगावत करना चाहता है।

महेश—(पुलिस से आवेश में) साहब, देखते क्या हैं, इसे भी उसी नर्कमें डाल दीजिए न, जहाँ इसका सच्चा देशभक्त कहलाने वाला भाई दिन, रात तारे गिनता रहता है।

शंभू—महेश, जुबान संभालकर बातें करो। कहीं ऐसा न हो कि मजबूरन तुम्हारी जुबान खींचना पड़े।

दिनेश—अरे ओ सरकारी हाकीम, अगर भला चाहते हो तो जीतू चाचा को छोड़ दो वरना····।

पुलिस—तुम मेरा क्या कर लोगे। हमने इन्सपेक्टर साहब को खबर कर दिया है, आते हीं होंगे।

(इन्सपेक्टर पाँच प्रहरी के साथ जीप लिए हुए पहुँचता है। पुलिस सेल्यूट करती है शंभू पिस्तौल लिए हाथ नीचेकर लेता है)

इन्सपेक्टर—(पुलिस से क्रोधमें) कौन है देश द्रोही ! जल्द बताओ, उसका ना[illegible]

पुलिस—सर ! पंचायत द्वारा लगाये गये इल्जाम में मैंने जीतूको पकड़ा। जिसमें यही (इशारा करके) दो विद्रोही नौजवान ऐसी, तैसी फिजूल बातें कर रहे है। सर ! इतना ही नहीं मुझे, गोली मारने पर तुला हुआ था।

इन्सपेक्टर—(प्रहरी से) अरेस्ट कर लो।

(प्रहरी दोनोंको हथकड़ी लगाता है और जीप में बैठाता है। जीतू इन्सपेक्टर से दिनेश और शंभू को छोड़ देने के लिए दया की भीख माँगता है।)

जीतू—(इन्सपेक्टर का पैर पकड़कर) मालिक, देवता, छोड़ दीजिए, इन दोनों बच्चों को। इसने कोई गल्ती नहीं किया। ये दोनों बेकसूर है।

दिनेश—(चिखकर) चाचा !

इन्सपेक्टर—(जीतू को लात से धक्के देकर) हट जा मेरे सामने से यह बदमाश सब हमारे शासन को खिलौना समझ रखे है ! इस बार ऐसा सबक सिखाऊँगा ताकि कभी भी पंचायत के मामलेमें दखल न दे सके।

(इन्सपेक्टर प्रहरी के साथ-साथ दिनेश, शंभूको भी अरेस्ट कर ले जाता है। जीप चली जाती है)

(पटाक्षेप)

अंक-दूसरा दृश्य-तीसरा

[नक्खू जेल (काठमाण्डू)]

[जेलर फाटक खुलवाता है। गणेशपुर गाँववासी करीब दस व्यक्ति श्याम को जेलसे निकलने की प्रतिक्षा में है। जीतू, जग्गू भी खड़ा है। जेल से श्याम निकलते हीं गाँववासी का पैर छूने की कोशिश करता है पर जीतू उठाकर गले लगा लेता है।]

श्याम—क्यों जीतू चाचा, गांव की स्थिति ठीक है न।

जीतू—(आँसू पोछते हुए) बेटा श्याम, जबसे तुम जेल गये हो न तवसे वह जालिम पंच लोग……।

(सिसक-सिसककर रोने लगता है। बातें करते-करते कुछ रास्ता भी तय हो चुका है)

श्याम—(रूककर) क्या बात हुई है चाचाजी, आप कहनेसे असमर्थ क्यों हैं।

जीतू—(कमीज निकालता है। पीठ पर कोड़े के काले-काले निशान अत्यधिक हैं। श्याम देखते हीं चीख उठता है)

श्याम—(पृथ्वी से मिट्टी उठाकर क्रोधमें) मैं मातृभूमि की सौगन्ध खाकर कहता हूं कि जब तक मैं पूरे नेपाल वासियों को जागरूक कर अपना हक, अधिकार, न्याय के लिए सच्चाई का मुकाबला करने के लिए मर मिटना भी पड़े उस स्थिति तक न करवा दूं तब तक मैं चैन की नींद न सोऊंगा। यह मेरी दृढ़ प्रतिज्ञा है।

(जीतू, ज[illegible]थ-साथ गाँववासी भी पृथ्वी से मिट्टी उठाते हुए)

सब गांववासी–(तेजआवाजमें) मैं भी अपनी मातृभूमीकी सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि जब तक पूरे नेपालवासी को अपना हक, अधिकार, न्याय न मिल जाता तब तक हम भी चैन की नींद न सोयेंगे। यह मेरी दृढ़ प्रतिज्ञा है।

(श्याम नारा लगाता है।)

श्याम—इन्कलाब।

सब—जिन्दाबाद।

श्याम—पंचायती व्यवस्था।

सब—मुर्दाबाद।

श्याम—हम सब जनता।

सब—एक हैं।

श्याम—अन्यायी सरकार को

सब—बदल डालो।

श्याम—पंचायती व्यवस्था को।

सब—बदल डालो।

श्याम—अपना हक।

सब—लेकर रहेंगे।

श्याम—तानाशाही।

सब—नाश हो।

श्याम—शहीदों का सपना।

सब—पूरा करेंगे।

श्याम—अब जनता।

सब—होशियार हैं।

श्याम—पंचायत की दलाली।

सब—अब नहीं चलेगी।

(सबके सब घुटने टेककर मिट्टी लेते हुए)

श्याम—माँ, तू हम सब जनता में इतनी शक्ति दे, कि यह पाप रूपी व्यवस्था का विनाश कर दूं तथा नयी सरकार कायम कर सारे देश में खुशी की लहर फैला दूँ।

श्याम और सब—जय मातृभूमि।

(पटाक्षेप)

अंक दूसरा **दृश्य चौथा**

(जि० कार्यालय)

उदय पुर

[सी० डी० ओ०, इन्सपेक्टर, सभापति बैठा है। प्रहरी आगे ड्यूटी संभाल रहा है। बियर की पार्टी चल रही है)

(एक पुलिस का प्रवेश)

पुलिस—(सैलूट देकर) पाकेट से चिठ्ठी निकालकर) सर !

इन्सपेक्टर—(पुलिस से) यु कैन गो।

(पुलिस का प्रस्थान)

सी० डी० ओ०—इन्सपेक्टर साहब, कैसी चिट्ठी है, पढ़िए तो।

(इन्सपेक्टर लिफाफा खोलकर पढ़ता है)

आई० जी० पी० कार्याल

काठमाण्डू

इन्सपेक्टर,

अगर किसी ने बगावत करने की कोशिस की तो जिन्दा भं डालो। [illegible]ते हुए हाथ को काट डालो। बढ़ते हुए कदम को तो

डालो। उठते हुए सर को उड़ा डालो। जि० में शान्ति बनाये रखो। अगर ऐसा न करोगे तो ससपेन्ट कर दिए जाओगे। यह मेरा आर्डर है।

आ०ई जी० पी०
कर्ण बहादुर

सी०डी०ओ०—इन्सपेक्टर साहब, मुझे अफसोस एक बात का है कि मेरा लड़का ज्ञान जब से कॉलेज से आया है, मेरे साथ बात-बात में वकालत करना शुरू कर दिया है। कहीं वो गलत रास्ते पर हाथ बढ़ाया, कदम बढ़ाया तो ....।

सभापति—सी० डी० ओ० साहब, यही हालत तो मेरी भी है। मेरा भाई भी बेहुदे श्याम का अनुकरण करने पर तुला हुआ है।

इन्सपेक्टर—मैं आप लोगों को यही सलाह दूँगा कि जितनी जल्द हो सके अपने परिवार को अपने काबू में रखें।

(इन्सपेक्टर के लड़के सलीम का प्रवेश)
(जन आवाज पत्रीका हाथ में लिए हुए है)

सलीम—गुड इवनिंग डैडी।

इन्सपेक्टर—सलीम, इनसे मिलो। ये हैं प्रमुख जिला अधिकारी और ये हैं जिला सभापति जी।

सलीम—आइ एम सौरी, (दोनों से) गुड इवनिंग अङ्कल।

सी० डी० ओ०—आओ, सलीम, कहो पढ़ाई कैसी चल रही है।

सलीम—(मन मुटाव पूर्वक) ठीक ही है।

सभापति—सलीम खड़े क्यों हो ? बैठो न।

(सलीम एक कुर्सी पर बैठ जाता है)

सी० डी० ओ०—इन्सपेक्टर साहब, आप सलीम की शादी की मिठाई कब खिलायेंगे ?



सभापति—(हँसते हुए) वाह, वाह क्या बँढ़िया बात आपने चुनकर कही।

(सलीम खामोश होकर जन आवाज पढ़ता रहता है)

इन्सपेक्टर—यह फैसला तो सलीम ही करेगा। दो बार आये हुए मेंहमान वापस चले गये।

सभापति—लेकिन ऐसा क्यों हुआ। यह तो ठीक नहीं हुआ ?

सलीम—अंकल, मेरी शादी तब तक न होगी, जब तक मुझे, नेपाल की जनता का हक, अधिकार, न्याय मिल नहीं जाता।

सी० डी० ओ०—(गम्भीर मुद्रा में) लेकिन सलीम। तुम्हारी शादी से इन बातों का क्या वास्ता, वैसे तुझे तो सब कुछ मिल गया है। क्या अन्याय हुआ है तेरे साथ।

सलीम—बहुत बड़ा अन्याय। यह पंचायती सरकार सिर्फ जनताओं की आँखों में धूल झोंककर शोषण करती रही है। निर्दोष, बेगुनाह नौजवानों का खून पीती आ रही है। एक सवाल मैं आपसे पूछता हूँ। उम्मीद है, आप सही उत्तर देंगे। अगर आपके सामने आपकी कमाई का ही दिया गया खाना आपके सामने से छिन लिया जाय, उस स्थिति में आप क्या चुप रहेंगे ? नहीं, आप चीखकर आवाज बुलन्द करेंगे ताकि आप के सामने रखा हुआ खाना पुनः आपको मिल जाय।

इन्सपेक्टर—(क्रोध में) सलीम ! क्या बकते हो ?

सलीम—(गुस्से में मुँह बनाकर) तो कान खोलकर सुन लीजिए पिताजी। मैं खुद इस सरकार का गुलाम हूं और मैं यह नहीं चाहता हूँ कि शादी कर गुलाम बच्चा पैदा कर अपनी मातृभूमि को शर्मिन्दा करूँ। जब तक मेरे नेपाल में मुझे, मेरी भोली-भाली जनता का अधिकार मिल नहीं जाता तब तक मैं अविवाहित ही रहूँगा।



सभापति—सलीम ! आखिर यह सब हम किसके लिए कर रहे हैं। तुम्हीं लोगों के लिए तो।

सलीम—अंकल ! एक परिवार को खुश करने के लिए लाखों, हजारों, परिवार का शोषण करना दूसरे परिवार को जिन्दा जलते देखना इससे बड़ा कोई पाप नहीं। थोड़ा ठंडे मिजाज से सोचिए चाचाजी। उस परिवार के ऊपर क्या गुजरता होगा, जो एक शाम ही खाना खाता है। अमीरी क्या जाने गरीबी का हाल, कि गरीबी कैसा दु:ख पूर्ण जीवन है।

इन्सपेक्टर—(गुस्से में) सलीम, तुम घर जाओ।

सलीम—सच्ची बात कड़वी होती है, पिताजी।

इन्सपेक्टर—(आग बबूला होकर) बहस करने की कोशिश मत कर। मैं कहता हूँ चला जा यहाँ से।

(सलीम का प्रस्थान)

इन्सपेक्टर—(दोनों से) सलीम अभी बच्चा है। समझा दूँगा। इसकी बातों का बुरा न मानेंगे।

सि०डी०ओ०—अपनी, अपनी ड्यूटी पर खयाल रखेंगे।

(सब खड़े हो जाते हैं तथा जाने की कोशिश करते हैं)

इन्सपेक्टर—(सभापति से) गुडइवनिंग।

सभापति—गुडइवनिंग।

इन्सपेक्टर—गुडइवनिंग। (सि० डी० ओ० सैलूट करता है)

(प्रस्थान)

(पटाक्षेप)

अंक दूसरा **दृश्य पाँचवाँ**

(दृश्य-गाँव का)

(गाँव में कुछ जनताओं के समक्ष श्याम, शंभू, दिनेश, सलीम, साथ-साथ जीतू, जग्गू, भी है।)

श्याम—आज के ही दिन हमारे पूर्वजों ने श्री पाँच महाराजा धिराज त्रिभुवन के साथ अपने नेपाल को स्वतन्त्र किया था। उस भयकर तूफान में कितने वीर शहीद हुए। कितनी माँ अपने बच्चे से बिछुड़ गयी। कितनी बहनें चड़ियाँ फोड़ डाली। आज फाल्गुन सात गते है। आज वीर शहीदों का दिन है। आज वीर शहीदों का सपना घर-घर में दिखाई पड़ रहा है। इसी के उपलक्ष में एक देश भक्ति को गीत आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।

(देश भक्ति गीत समाप्त होते हीं तालियों की आवाज से सारा गगन जग-मगा उठता है। इतने में राम, रामू के साथ शराब में बेहोश हाथ में बोतल लिए पहुंचता है। देखते हीं सब चका चौंध होते जा है)

राम—(लड़खड़ाते हुए नशे में) रामू—।

रामू—(लड़खाड़ते हुए नशे में) यार ! अरे—जो मजा शराब में है वो—कहते-कहते गिरने की कोशिश करता है फिर संभल जाता है

श्याम-(गुस्से में) भैया। मैं सोंच भी नहीं सकता था कि आप इतने गिरे हुए इन्सान बन जायेंगे।

रामू-(इशारे से व्यंगात्मक शब्द) लो, आ गया तुम्हारा गुरू—अब मैं चला—(लड़खड़ाते हुए धीरे से भागने की कोशीस करता है श्याम आगे बढ़कर उसे रोक लेता है।)

श्याम—(क्रोध में) रामू, तुम इन्सान नहीं, हैवान हो। तुम्हारे जैसे ही कमी[illegible]फ इन्सान को ऐसी गन्दगी में जीने के लिए बहक

कर ले जाते है, जहाँ से निकलना नामुमकिन हो जाता है। बोल, बदमाश, तुमने राम भैया को क्यों बहकाया है। क्या बिगाड़ा है मैंने तुम्हारा।

राम—(नशे में, गुस्सा होकर) श्याम। क्या—तुझे पता नहीं कि रामू मेरा दोस्त है। यह जो भी करता है ठीक करता है।

श्याम—(कड़ककर) ऐसे जलील इन्सान से दोस्ती करने के बजाय मर जाना बेहतर है। एक ऐसा भी दोस्त होता है जो गलत कार्य करने से रोकता है और एक (इशारा करके) यह है घर-घर में काँटे बोने के बजाय किया ही क्या ? इन अन्यायी पंच लोगों की दलाली'

राम—(रामू का हाथ थाम कर लड़खड़ाते हुए) रामू—चलो मेरे लि तो सब कुछ तुम ही हो—

(दोनों का प्रस्थान)

श्याम—मैं आप लोगों से क्षमा माँगता हूँ कि राम भैया ने बीच में आकर बाधा डाली। भाइयों, कल हम लोगों को अपनी जनता की माँग के लिए जुलूस के साथ धनकौल, बसन्तपुर, होते हुए हरपुरवा बाजा पर आम सभा करनी है।

जीतू—बेटा श्याम, कल वहाँ हम लोग क्यों जायेंगे ?

श्याम—जीतू चाचा जी। हम जनता के साथ जो अन्याय, अत्याचार, शोषण, देश विकास के बजाय किसी व्यक्ति का विनाश हुआ इसके विषय में जनताओं को सुझाव देंगे तथा लोगों को अपने अधिकार लेने के लिए जागरूक करेंगे।

शंभू—(खड़ा होकर) भैया, कल हरपुरवा बाजार का भी दिन है। कल की आम सभा काफी महत्वपूर्ण होगी।

दिनेश—श्याम ! कहीं हरपुरवा का कोई व्यक्ति पुलिस को सूचीत करके धाँधली करवाने की कोशिश की तो ?—

श्याम—कहा तो तुमने ठोक है लेकिन हम लोग किसी को लूटने नहीं जा रहे हैं जो पुलिस के आने से डर जायें। वैसे अगर पुलिस-आयो भी तो वातावरण और भी शान्ति पूर्ण रहेगा।

सलीम—(खड़े होकर) हम लोग तैयार हैं।

ब के सब—हम लोग तैयार हैं।

याम—कृपया मैं जनता से अनुरोध करूँगा कोई भी संगीन, लाठी, जुलूस में न ले जायें।

सब—ठीक है। हम लोग बगैर लाठी, हथियार के जायेंगे।

श्याम—तो ठीक है। कल दो बजे तक हम लोग काफी संख्या में हरपुरवा बाजार में पहुंच जायेंगे।

शंभू—इन्कलाब।

सब—जिन्दाबाद।

(सभी मिलकर उत्साहपूर्ण आवाज से नारे को दुहराते है)

(प्रस्थान)

(पटाक्षेप)

अंक दूसरा दृश्य छठा

(हरपुरवा बाजार लगा है। सामान का बिक्रेता बैठा है। खरीददार लोग सामान खरीद रहे है। एक विशाल जुलूस की आवाज सुनाई पड़ती है। खरीददार तथा विक्रेता सामान उठाकर भागने की कोशीस करते है। हरपुरवा का एक साहुकार आकर कहता है।

साहुकार—(इशारे देकर) रूको, डरो मत। हम लोगों ने पुलिस का बन्दोबस्त कर रखा है। अगर ये बदमाश, लुटेरे लोग ने तुम लोगों के साथ बुरा सलूक किया तो इन सबों की लाश तुम लोग अपनी नजर से देखोगे



(एक नौजवान, सुनते ही नजदीक आकर कहता है।)

नौजवान—(गुस्से में) अरे ओ मोटे सेठ। लुटेरे खुद हो और इन सब को लुटेरा, बदमाश कहते हो। ये लोग जनता को समझाने आ रहे हैं। बहकाने नहीं। समझें।

(जुलूस बाजार में पहुँचता है।)

श्याम—(नौजवान से विनम्र होकर–) क्या बात है भाई।

नौजवान—(सेठ की तरफ इशारा करके) यह जो मोटा सेठ है- कहता है। पुलिस का बन्दोबस्त कर दिया गया है। इसने सोंच रखा है आम सभा सफल न होने देगा।

श्याम—(गुस्से में) सरफरोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है देखना है जोर कितना, बाजुए कातिल में है।

(पाँच पुलिस राइफल लिए पहुँचती है)

श्याम—क्या बात है, हवलदार साहब। आप लोगों का किधर से आना हुआ।

हवलदार—अगर तुम लोगों को जान प्यारी है तो वापस लौट जाओ। नहीं तो—।

श्याम—(गुस्से में) मार दोगे गोली से। क्यों ? ये बन्दूकें किसी बुज-दिल और कायर को दिखाना। हम-लोगोंने यह आम-सभा जनता को समझाने, अपना अधिकार, न्याय माँगने के लिए किया है। बहकाने के लिए नहीं।

(नौजवान पुलिस के समीप जाकर)

नौजवान—सिपाही जी। आप भी अगर खैरियत चाहते हैं तो कृपया शान्ति पूर्वक चाय के दुकान पर जाकर गर्म-गर्म चाय पियें।

एक मोटा सिपाही—(गुस्से में) तुम हमसे मजाक करता है। क्या ? देखना है ? (हवलदार इशारे करता है। सेना पुलिस पीपल

की गाछ पर आकाश फायर दो गोली करता है। सब जनता सम
झती है कि यह सब डराने की एक कला है। पर सचमुच में य
घोड़ा पश्चिम जाकर गोली उत्तर की तरफ छोड़ता है। बाजा
में भागा-भागी होने लगती है। उत्तर की तरफ भागता हुआ नौजवा
वहीं पर घायल होकर गिर जाता है। कराहने लगता है। पानी…
पानी…कहते-कहते दम तोड़ देता है। उसके बाद पश्चिम कं
तरफ पुलिस लगातार गोली छोड़ती जा रही है। करीब दो मिन
के अन्दर ग्यारह नौजवान घायल होकर गिर जाते है। फि
दक्षिण की तरफ तीन गोलियाँ छोड़ता है। जिसके फलस्वरू
उन्नीस व्यक्ति की लाश गिर जाती है। जिसमें एक बच्चा जो ए
घरके बरान्दे पर पूरब मुँह कर खड़ा रहता है गिर कर प्राण त्या
देता है। फिर पूरब और उत्तर की ओर में फायर करता है
जिसके फलस्वरूप घर की मिट्टी फोड़ते हुए गोली एक लड़के कं
लगती है। जो अपने घर में ही प्राण दे देता है। पुलिस फाय
करती हुई पश्चिम की तरफ भागती है। जनता हिम्मत बाँधते हु
खदेड़ रही है। पकड़ो-पकड़ो की आवाज दे रही है। एक बुद्ध
मियाँ का भाई भाग रहा है। जिसे पुलिस गोली मार देती है
बुद्धन मियाँ अपने भाई को मरते देख कर आँखों में खून लि
पुलिस की तरफ पकड़ने को दौड़ता है। संयोग बस हवलदार कं
पकड़ लेता हैं। पकड़िये पुलिस भाग रही है। हवलदार को न दे
कर चार पुलिस हवलदार के नजदीक आ रही है। हवलदार क
पैर थामे हुए बुद्धन मियाँ गिरा हुआ है। हवलदार करवट लेक
पिस्तौल निकालता है और बुद्धन मियाँ के सर को फोड़ डालता है
खून को धारा बहने लगतो है। फिर भी बुद्धन मियाँ पैर पक
हुआ है। तब तक दूसरा पुलिस पहुँचते ही दबिया (खुकड़ी)
उसके बाँ… काट डालता है। फिर गर्दन पर प्रहार करके स



पुलिस भाग जाती है। वहाँ से पुलिस भागती जा रही है। कुछ दूरी पर खेत में माटी काटने वाले मजदूर करीब दस जवान मौजूद हैं। पकड़ो, खूनी को पकड़ो की आवाज सारे आकाश में गूँजने लगती है। आवाज सुनते ही माटी काटने वाला मजदूर पुलिस की तरफ गरजते हुए पकड़ने की कोशिश करता है। उस वक्त पुलिस फिर फायर करती है वहीं पर दो मजदूर प्राण गँवा बैठते हैं। बकिए गरीब पुलिस को पकड़ने की कोशिस करता है पर असफल हो जाता है।

(पटाक्षेप)

अंक तीसरा

दृश्य प्रथम

स्थान—हरपुरवा बाजार। एक श्मसान घाट की तरह दिखाई पड़ रहा है। इन्सपेक्टर गाड़ी लिए पहुँचता है। पुलिस से लदे जीप देखते ही जनता भागने की कोशिश करती है। इन्सपेक्टर और पुलिस गाड़ी से उतर कर)

इन्सपेक्टर—हवलदार, किस-किस व्यक्ति के घर की लाश है। (दो-चार मजदूर पहुँचकर)

एक गरीब—(रोने की मुद्रा में) माइ, बाप, हमलोगों पर बहुत बड़ा अत्याचार हुआ है।

इन्सपेक्टर—(कड़ककर) चुप रहो। जो जैसा करता है। उसका फल वैसा ही मिलता है। वह सब बदमाश था। लुटेरा था। मेरा फर्ज जो था, वह हमने करवाया। समझे ! एक और बात सुन लो, जो घायल हो गया है उसे हास्पिटल में पहुँचा दो या ले जाओ–हो सकेगा तो मैं उसके उपचार का पैसा सरकार से दिलवाने की कोशिश करूँगा।

दूसरा गरीब—लेकिन मालिक, मेरा भाई मारा गया। मेरे पास भाई के सिवा कोई नहीं है।

इन्सपेक्टर—देखो ! उसे उसी प्रकार जाना लिखा था। इसमें हमलोगों का क्या कसूर है।

तीसरा गरीब—माइ, बाप ! मेरे पिताजो सब्जी खरीदकर घर लौट रहे थे। उन्हें क्यों मारा गया।

इन्सपेक्टर—(गुस्से में) एक बार कह दिया न। उसे गोली द्वारा ही

मरना था। जाओ, घर जाओ ! यहाँ बहस करने की कोई जरूरत नहीं।

(इन्सपेक्टर ड्राइवर को गाड़ी ले चलने का इशारा करता है)

(प्रस्थान)

(पटाक्षेप)

अंक तीसरा **दृश्य दूसरा**

स्थान—एक झील के किनारे श्याम उदास और परेशान हो, बैठा है। नगीना पीछे से जाकर श्याम की आँखें मूँद देती है। पर श्याम कुछ भी जवाब नहीं देता है)।

नगीना—श्याम ! (श्याम कुछ नहीं बोलता है)

नगीना—(प्रेम पूर्वक) श्याम ! क्या मुझसे बात भी नहीं करोगे ? अगर नहीं बोलोगे तो, लो अब मैं चली।

श्याम—(दु:ख से) नगीना ! पुरानी बातों को भूल जाओ।

नगीना—(चौककर) पागल हो गये हो क्या ?

श्याम—(उठते हुए दो कदम बढ़कर) नगीना ! जब तक मैं अपना फर्ज पूरा न कर लूँ तब तक तुम से मेरा कोई गहरा ताल्लुक न रह जायगा।

नगीना—क्या फर्ज है तेरा ?

श्याम—इसी साल ज्येष्ठ दस गते का शाही घोषणा द्वारा आने वाली जन्मत संग्रह में अपने गाँव वालों को ही नहीं बल्कि पूरे नेपाली को अपना हक, अधिकार, न्याय, अपनाने के लिए जागरुक न कर दूँ।

नगीना—श्याम ! मैं भी चाहती हूँ कि तेरे जैसे ही सच्ची, देश भक्त बनूँ। आज मातृ-भूमि की यही पुकार है यह मैं [illegible]स करती हूँ।

श्याम—(बुलेटीन देते हुए) पढ़ो, पढ़ते ही खून खौलने लगेगा।

नगीना—(दो शब्द पढ़कर) मैं आज अपने श्याम के सामने सौगन्ध खाकर कहती हूँ। जब तक मेरा अधिकार वापस न मिल जाय मैं हर्गिज चैन की नींद न सोउँगी।

श्याम—(नगीना के पास आकर) नगीना। मेरी एक हार्दिक इच्छा यह भी है कि मैं मरूँ तो देश के वास्ते और तेरी बाहों में।

नगीना—(श्याम के मुँह पर हाथ रखकर) ऐसी बातें न कहो श्याम! काश! ईश्वर की मर्जी होती कि मैं तेरे साथ मातृभूमि पर सहीद हो जाती।

श्याम—समय बहुत कम है नगीना। तुम एक काम करोगी।

नगीना—क्या काम है?

श्याम—तुम गाँव में घर-घर में जाकर माँ, बहनों को यह समझाओ कि आने वाली जन्मत संग्रह में वो अपने बच्चों के भविष्य के लि बहुदलीय में वोट दें।

नगीना—अगर किसी ने पूछा को बहुदलीय क्या है तो मैं जवाब क्य दूँगी?

श्याम—बहुदलीय व्यवस्था का अर्थ है अपना विचार प्रकट करन जनता की राय सलाह से सरकार कायम होगी। बहुदलीय व्यवस्थ में कानून की नजर में सब बराबर समझा जाता है।

नगीना—लो, अब मैं समझ गयी। ठीक है ऐसा ही समझाऊँगी।

श्याम—तो ठीक है। अब चलना चाहिए।

नगीना—(जाते हुए) बाइ, बाइ

श्याम—(जाते हुए) बाइ, बाइ,

(दोंनों एक दूसरे की तरफ देखते हुए प्रस्थान)

(पटाक्षेप)

अंक तीसरा **दृश्य तीसरा**

(**स्थान**—श्याम भाषण दे रहा है। जीतू, जग्गू, तथा पंच लोग के समक्ष गाँव के अन्य व्यक्ति भी मौजूद हैं)

श्याम—मेरे गाँव में नौजवान, विद्यार्थी, किसान, मजदूर, कर्मचारी, आप सबों से अनुरोध है कि आने वाली जन्मत संग्रह के विषय में जिन्हें भी शंका हो वह निर्भीक होकर पूछें। जहाँ तक जानता हूँ उत्तर देने की कोशिश करूँगा।

एक बूढ़ा व्यक्ति—बेटा श्याम, वोट का अर्थ क्या हुआ ?

श्याम—बाबा, वोट का अर्थ है मतदान, मतलब आपका विचार क्या है ? गुप्त रूप में विचार प्रकट करना।

दूसरा बूढ़ा व्यक्ति—यह सरपंच या प्रधान पंच का वोट है क्या ?

श्याम—नहीं बाबा, यह सरपंच या प्र० पं० का वोट नहीं है।

दूसरा बूढ़ा व्यक्ति—तो कौन चीज का वोट है ? हम गाँव वाले अशिक्षित हैं। हम लोगों को समझा कर कहो न ?

श्याम—बाबा, आप कई बार पंचायत में गये हैं, क्या ? आप कभी अपना विचार व्यक्त कर सके हैं ? वही लोग पंचायत में बोलते हैं जो पंच हैं। या जो अमीर हैं, जिनके भय से पंच लोग भी कुछ वास्ता करता है। मैं आप लोगों से एक प्रश्न पूछता हूँ क्या ? पंचायत में कभी जायज फैसला हुआ है ? जवाब दीजिए।

एक बूढ़ा व्यक्ति—(व्यंगात्मक शब्द में) कैसी अजीब बातें करते हो श्याम। अरे पंचायत लोग तो देवता हैं देवता। इन पंच महानुभावों का किया गया फैसला यहाँ क्या भगवान के घर में भी रेकार्ड हो जाता है। अगर जो वास्तविक कसूरदार व्यक्ति है उससे रू० घूस रिश्वत लेकर पक्षपात कर देते हैं। अरे भाई ये पक्के रामभक्त लोग हैं जो हमेंशा समाज के मुख पर कहेंगे कि मैं तो काल से डरूँगा ही नहीं। सच्चा फैसला करूँगा।

दूसरा बूढ़ा व्यक्ति—ओ जानकी भाई, यही चार दिन की तो बात है। मेरा चंचरी चोरी हो गया। मैंने चोर को भी पकड़ लिया, जाकर पंचायत में कहा, पर सुनता कौन है क्यों कि मैं गरीब आदमी हूं न। पर अगर गाँव में किसी पंच का या किसी अमीर का जूता भी भूल जाय तो पिउन द्वारा रात में डिग्री पड़ती है। गरीब के फैसले और अमीर के फैसले में कितना फर्क है।

एक बूढ़ा व्यक्ति—(हिम्मत से) हमलोग निर्दलीय को वोट नहीं देंगे।

सब गाँव वाले—हम लोग निर्दलीय को वोट नहीं देंगे।

श्याम—हम गाँव वालों के साथ।

सब—(आवाज में) अन्याय हुआ है।

श्याम—पंचायती व्यवस्था।

सब—मुर्दाबाद !

श्याम—खून का बदला।

सब—वोट से लेंगे।

श्याम—जन्मत संग्रह में।

सब—बहुदलीय को जितायेंगे।

श्याम—बहुदलीय व्यवस्था

सब—जिन्दाबाद।

श्याम—किसान, मजदूर।

सब—एक हैं।

श्याम—लाठी, गोली की सरकार।

सब—नहीं चलेगी। नहीं चलेगी।

श्याम—भाइयों, आप सबों से अनुरोध है कि जिला प्रहरी कार्यालय मेरे निर्दोष दो देश भक्त नवयुवक को पकड़-कर ले गयी है हम सब मिलकर [illegible] लें, और दिनेश, शंभू को छुड़ा कर लावें।

सब—(आवाज देकर) हम सब चलने के लिए तैयार हैं।

(श्याम, नारा लगाता हुआ जि० प्र० का० में जा रहा है। जि० प्र० का० के नजदीक जाकर)

श्याम—निर्दोष व्यक्ति को।

सब—छोड़ दो।

श्याम—वीर दिनेश।

सब—जिन्दाबाद।

श्यास—वीर शंभू।

सब—जिन्दाबाद।

श्याम—नयी सरकार

सब—कायम करेंगे।

(नारा समाप्त होते ही इन्सपेक्टर दो प्रहरी को लेकर आता है।)

इन्सपेक्टरे—(गुस्से में) रस्सी जल गयी पर ऐंठन न गयी? श्याम, कोड़े की मार को भूल गया है क्या?

श्याम—(कड़ककर) इन्सपेक्टर! खयाल करो वो दिन जिस रोज मैंने तुम्हें कहा था कि इन्सपेक्टर, मेरे खून की प्रत्येक बूँद एक-एक साथी को पैदा करेगी। आज मेरे साथी पैदा हो चुके हैं। नजर उठाकर देख, कितने श्याम यहाँ मौजूद हैं।

इन्सपेक्टर—(गुस्से में) गीदड़ की मौत आती है तो वह शहर की तरफ भागता है।

श्याम—(आग बबूला होकर) हिम्मत है तो पकड़कर देख। आज दो हीं फैसला करने की उम्मीद लेकर आया हूँ। शंभू और दिनेश जो बेगुनाह है उसे साथ ले जाऊँगा या तेरी यह-न्याय के बदले अन्याय रूपी भवन को राख कर दूँगा।

(सब के सब जि० कार्यालय के तरफ धीरे-धीरे बढ़ते है।)

इन्सपेक्टर—(पिस्तौल निकाल कर) रूक जाओ ?—मैं कहता हूँ। रूक जाओ। नहीं तो—। गोली मार दूँगा।

सब गाँव वाले—(गरजकर) हम सब तैयार हैं चला गोली।

(मजबूरन इन्सपेक्टर अन्दर चला जाता है और दिनेश, शंभू को बाइज्जत छोड़ देता है। दिनेश और शंभू के आते ही लोग खुशी से उठाते हुए नारे लगाते हुए घर जा रहे है)

श्याम—वीर दिनेश।

सब—जिन्दाबाद।

श्याम—वीर शंभू।

सब—जिन्दाबाद।

श्याम—जन्मत संग्रह

सब—निष्पक्ष हो।

(प्रस्थान)

(पटाक्षेप)

अंक तीसरा दृश्य चौथा

(जग्गू, पंडित को बुलाकर नगीना की शादी का दिन निश्चित करना चाहता है। दिनेश की माँ घर बुहार रही है। पंडितजी पंचांग देख रहे है।)

जग्गू—पंडित जी ! शादी का शुभ दिन कौन अच्छा होगा ?

पंडितजी—(पंचांग देखते हुए) वैसे उसी फाल्गुन बदी पंचमी का दिन सबसे अच्छा है।

(नगीना पहुँचती है। पंडितजी को देखकर कुछ नहीं बोलती है)

पंडितजी—अच्छा, अब मैं चलता हूँ। वैसे जब भी याद करेंगे। मैं आ जाऊँगा।

जग्गू—ठीक है, मैं आज हीं अपने दोस्त रंजीत को खबर दे-दूँगा की शादी का शुभ दिन निश्चित हो गया है।

(पंडितजी का प्रस्थान)

नगीना—पिताजी, यह शादी नहीं होगी।

जग्गू—(गुस्से में) क्या कहा, शादी नहीं होगी। लेकिन क्यों ?

नगीना—(मन मुटाव से) मेरी मर्जी।

दिनेश की माँ—बेटी, तू कैसी पगली जैसी बातें करती हो। बेटी तो हमशा परायी ही मानी जाती है।

नगीना—(आँसू छलकाते हुए) माँ, तुम नहीं जानती। श्याम और मैं एक दूसरे से बचन बद्ध हैं।

जग्गू—(गुस्सेमें) मैं अपने दोस्त की इज्जत को क्या मिट्टी में मिला दूँ। ऐसा नहीं हो सकता। ये शादी होगी और जरूर होगी।

(नगीना गुस्से में होकर चली जाती है।)

(दिनेश और श्याम का प्रवेश)

दिनेश—(खुश होकर) क्यों माँ, हम लोगों के आते ही तुम लोग चुप क्यों हो गये। (श्याम से) अरे भाई श्याम ! बैठो न। (श्याम और दिनेश एक चारपाई पर बैठ जाते है।)

जग्गू—श्याम बेटा, कैसे हो ? कैसे आना हुआ ?

श्याम—चाचाजी ! क्या करूँ, दिनेश मानता ही नहीं था।

दिनेशकी माँ—बेटा, नगीनाकी शादीका दिन निश्चित हो गया है। क्या विचार है तेरा ?

श्याम—(उदास होकर) ठीक ही है चाचीजी। मुझे भी खबर करेंगे। अब मुझे इजाजत दीजिए। घर में जरूरी काम है

(श्याम जाने का उपक्रम करता है। पर दिनेश रोक लेता है।)

दिनेश—(माँ से) माँ, बहन का लगन हों और मेरे साथी को मिठाई भी नहीं।

दिनेशकी माँ—(अन्दर जाते हुए) हाँ, हाँ, श्याम बेटा, रूको, मुँह तो मीठा करते जाओ। (अन्दर चली जाती है)

(श्याम उदास होकर, कुछ नहीं बोलता है। तथा यूंहीं खड़ा है।)

दिनेश—अरे यार। बैठ जाओ न। (श्याम का चेहरा फीका देखकर) क्या बात है श्याम, अभी तुझे हो क्या गया है। अभी-अभी तो हम दोनों हँसते गाते आये हैं।

(माँ कटोरे में मिठाई लाती है। ग्लास में पानी भी है। श्याम और दिनेश एक-एक मिठाई खाते हैं।)

श्याम—दिनेश, मुझे बहुत जरूरी कार्य है, अब जाने दो न।

दिनेश—कल के प्रोग्राम खयाल है न।

श्याम—हाँ, मुझे खयाल है, तुम अपना कार्य सँभालना।

(श्याम, जग्गू का और दिनेश की माँ का पैर छूता है)

(श्याम का प्रस्थान)

जग्गू—दिनेश, शादी की तैयारी जल्द ही होनी चाहिए क्योंकि अब सिर्फ आठ ही दिन बच गया है।

दिनेश—सब बन्दोबस्त मैं कर लूँगा।

(पटाक्षेप)

अंक-तीसरा दृश्य-पाँचवाँ

(**स्थान**—रंजीत का मकान। रंजीत का लड़का जो पंचायत वालों का जासूस है। शैलेन्द्र अपने पिता रंजीत का एक ही औलाद है। शैलेन्द्र अपनी पत्नी नगीना के साथ सुहाग रात मनाने गया है। पलंग पर

एक डायरी पड़ी रहती है जो नगीना उठाती है। शेलेन्द्र एक नं० का जुआड़ी, शराबी और चरीत्रहिन भी है)

शैलेन्द्र—(डायरी छिनते हुए) यह तुम्हें देखने की जरूरत नहीं। (बाहों में सिमटने की कोशिश करता है पर नगीना इनकार करती हुई थोड़ा हट जाती है।) आज सुहाग रात है न। आज का दिन कितना शुभ दिन है।

नगीना—(घूँघट ताने हुई) पहले डायरी दीजिए।

शैलेन्द्र—(नगीना का घूँघट उठाकर हाथ पकड़कर) पहले मेरे पास आओ। बाद में डायरी।

(शैलेन्द्र डायरी देता है। श्याम और दिनेश, शंभूके ऊपर वारंट का कागज जो डायरी में रहता है उसे पढ़ती है)

नगीना—बैठिए। आपसे कुछ जरूरी बातें करनी है।

शैलेन्द्र—क्या बात है ? (बैठ जाता है।)

नगीना—यह जो वारंट है ......।

शैलेन्द्र—जो देश के साथ गद्दारी करेगा, उसे सरकार किसी कीमत पर नहीं छोड़ सकती।

नगीना—क्या गद्दारी किया है श्याम, दिनेश, शंभू ये प्रजातन्त्र वादी लोग ने ?

शैलेन्द्र—सरकार के हर नियम को मानना प्रत्येक जनता का फर्ज है।

नगीना—कौन सा फर्ज है ? कैसा फर्ज ? क्या, मैं पूँछ सकती हूँ कि, एक गरीब आदमी जो दिन भर खून पसीना एक कर आपके इस (मकान के तरफ इशारा करके) आलीशान भवन को बनाया। उसके प्रति आपकी यही श्रद्धा है न कि अगर आपसे अपने बच्चों की बिमारी के इलाज के लिए, पैसा माँगता है तो आप उसे धक्के देकर निकाल देते हैं और यह भी कहते हैं कि तुम्हारे पास है ही क्या ? जो तुम्हें पैसा दूं। न जमीन है न जगह [illegible] है।

शैलेन्द्र—(गुस्से में) तुम मेरी पत्नी हो, तेरा फर्ज क्या है पति की सेवा करना।

नगीना—आपने ठीक ही कहा, मेरा फर्ज यह भी है कि अगर आप गलत रास्ते पर जायें तो आपको रोकना।

शैलेन्द्र—क्या गलत और क्या सही है, मैं खुद ही फैसला लेता हूँ। तेरी सलाह की कोई जरूरत नहीं।

नगीना—अगर आप सलाह न मानेंगे तो मै आपको गलत कार्य करने पर अवश्य रोक सकती हूं।

शैलेन्द्र—(क्रोध में) चुप रहो। आज सुहाग रात यही सोचकर मैंने इतनी सारी बातें सुन लिया है।

(शैलेन्द्र जाने का उपक्रम करता है पर नगीना के रोकने पर भी घर से बाहर चला जाता है।)

(पटाक्षेप)

अंक तीसरा **दृश्य छठा**

स्थान—जि० कार्यालय सि० डी० ओ० सभापति, इस्पेक्टर बैठा है। साथ साथ शैलेन्द्र भी बैठा है।

सी० डी० ओ०—इन्सपेक्टर साहब ! ये बगावत करने वाला बदमाश अब ऐसे नहीं मानेगा ?

इन्सपेक्टर—मैं आपका मतलब नहीं समझा।

सभापति—मतलब साफ जाहिर है कि जब भी ये लोग आम सभा करें। फलीभूत न होने देगें।

शैलेन्द्र—सर ! मेरी एक राय है।

इन्सपेक्टर—आप कहना क्या चाहते हैं।

शैलेन्द्र—इसी पाँच गते को आम-सभा होने वाली है। उसमें मुख्य दस-बीस सक्रीय रूप में बहुदलीय प्रचार प्रसार करने वालों को कोई दूसरा अभियोग लगाकर ऐरेस्ट कर लें।

इन्सपेक्टर—नहीं। वहुदलीय की आम सभा को रोकना या झूठे अभियोग में किसी निर्दोष को फँसाना हमारे लिए खतरा पैदा कर सकता है। अब जनता काफी होशियार हो चुकी है। इन बहुदलीय के कार्य कर्ताओं का साथ जनता हर कीमत पर देने को तैयार है।

शैलेन्द्र—तो क्या, ऐसा नहीं हो सकता ? सांप भी मर जाय और लाठी भी बच जाय।

सी० डी० ओ०—यह सोचावट तो मेरे नजर में अच्छा ही है।

सभापति—लेकिन यह काम करेगा कौन ?

शैलेन्द्र—मैं करूँगा। (पिस्तौल निकालकर) यह एक ऐसा पिस्तौल है जिसकी आवाज सिर्फ चार तक ही सुनाई पड़ेगी।

इन्सपेक्टर—यह काम कब होगा ?

शैलेन्द्र—कल बारह बजे रात को।

इन्सपेक्टर—क्या तुम्हारे पास क्रिमनल हैं ?

शैलेन्द्र—एक नहीं सैकड़ों है। पर एक बात ध्यान रखेंगे। फोन हमेशा पास रखेंगे। वक्त के साथ तैयार हो जायेंगे।

इन्सपेक्टर—ऐसा ही होगा। पर आप वेश बदल लेंगे, क्योंकि श्याम दिनेश, शंभू भी काफी चालाक हैं।

शैलेन्द्र—यस सर ! (शैलेन्द्र सैलूट देकर चला जाता)

सभापति—अब आयेगा खिलाड़ी को खेल खेलने का मजा।

सी०डी०ओ०—वास्तव में ऐसे बदमाशों को सजा मौत ही मिलनी चाहिए।

इन्सपेक्टर—ठीक है। अब हम लोग चलें, क्योंकि और भी सारा कार्य ठप्प पड़ा है।

(प्रस्थान)

(पटाक्षेप)

•

अंक चौथा　　　　　　　　　　　　　　　　दृश्य प्रथम

(स्थान—शैलेन्द्र की हवेली । नगीना सोयी हुई है। शैलेन्द्र अपना सूटकेश लेने कमरे में आता है। सूटकेश में से दो रिवाल्वर निकालता है। रिवाल्वर में गोली रखता है। आवाज दरवाजे की तरफ से नगीना के कानों में आ रही है। नगीना करवटें बदलती है। नींद से जागती है तथा सोई हुई ही एक आँख से शैलेन्द्र की करामात देख रही है। शैलेन्द्र दरवाजे की तरफ जाकर पाँच क्रिमनल से बातें कर रहा है। दो पिस्तौल क्रिमनल को देता है। नगीना अपने बिस्तर से आकर पर्दे की ओट से सब बातें सुन रही है। क्रिमनल को दस्ती भी शैलेन्द्र देता है जिससे पिस्तौल संभाल कर रख सके।)

शैलेन्द्र—(क्रिमनल से) देखो, शंभू और दिनेश को आज ही रात स्वर्ग-लोक पहुंचा देना है।

क्रिमनल १—सर ! श्याम का क्या हुआ ?

शैलेन्द्र—(एक पिस्तौल दिखाकर) इसमें जो गोली है सिर्फ बहादुर आदमी के लिए है। श्याम को मैं मारूँगा तुम लोग जाओ।

(क्रिमनल चला जाता है। नगीना आती है।)

शैलेन्द्र—(नगीना को देखकर चौंकते हुए) तो तुम सारी बातें सुन चुकी हो ?

नगीना—हाँ, मैं सारी बातें सुन चुकी हूँ। मैं आप से रिक्वेस्ट भी करती हूँ कृपया आप ऐसा जलील कार्य न करें।

शैलेन्द्र—यह मेरी इज्जत का सवाल है। मेरी पोस्ट का प्रमोशन होगा। मेरा नाम सरकार की फाइल में सदा के लिए अंकित रहेगा।

नगीना—किसी की जान की कीमत से क्या आपकी पोस्ट ही बड़ी है ? किसी की जान लेकर सरकार से इज्जत पा लेना इससे बड़ी बेवकूफी और क्या होगी।

शैलेन्द्र—(थप्पड़ मारते हुए) बेवकूफ लड़की। मुझे चली हो सीख देने। पोलिटिक्स क्या है, मैं जानता हूँ तुम सिर्फ घर के कामकाज के विषय में जान सकती हो।

नगीना—(पैर पकड़ कर) आप मेरे पति हैं। मैं श्याम की जिन्दगी की भीख माँग रही हूँ। एक वो ही ऐसा सच्चा देश भक्त है जिसने सारी जनता को अच्छे बुरे का सुझाव देता है।

(शैलेन्द्र अपना पाँव नगीना से छुड़ा लेने की कोशिश करता है। नगीना पाँव पकड़े दो डेग पाँव के साथ घसिटा जाती है। शैलेन्द्र अपने पाँव से नगीना को धक्के देता है। नगीना गीर जाती है। शैलेन्द्र जाने लगता है। नगीना जाकर शैलेन्द्र के हाथ की पिस्तौल छिनने की कोशिश करती है।

शैलेन्द्र—(गुस्से में) मैं कहता हूँ छोड़ दे मुझे।

नगीना—नहीं, चाहे मेरे प्राण आप ले लें, पर मैं अपने जीते जी कभी भी अपने सच्चे देशभक्त को न मारने दूँगी।

(दोनों की छीना झपटी में गोली शैलेन्द्र के माथे पर लगती माथे से खून की धारा बहने लगती है। शैलेन्द्र गिर जाता है। इतने ही में इन्सपेक्टर पाँच पुलिस लेकर पहुँचता है। और नगीना को गिरफ्तार करता है और जीप में बैठता है। शैलेन्द्र की लाश को जीप में ले जाता है।

(पटाक्षेप)

अंक चौथा दृश्य दूसरा

(स्थान— कोर्ट ! जज बैठा है । गीता टेबुल पर रखी हुई है । कोर्ट में अन्य लोगों के साथ दिनेश, सलीम, जीतू, जग्गू बैठा है । सी०डी०ओ०, सभापति, इन्सपेक्टर भी एक बगल बैठा है । वकील नगीना न बयान ले रहा है । श्याम भी अपनी फाइल वगैरह लिए बैठा है जो नगीना का वकील बनकर आया है । नगीना एक कटघरे में खड़ी है ।

वकील—(गीता नगीना के नजदीक लेजाकर) आप गीता पर हाथ रखकर कहिए कि मैं जो कहूँगी सचकहूँगी के सिवा कुछ नहीं कहूँगी ।

नगीना—(गीता पर हाथ रखकर) मैं जो कुछ कहूँगी सच कहूँगी सच के सिवा कुछ नहीं कहूँगी ।

वकील—मिस नगीना जी । ३६-५-४ की रात को आप कहाँ थीं ।

नगीना—मैं अपने कमरे में थी ।

वकील—मिस नगीना । आप ने अपने पति स्व० शैलेन्द्र जी को ३६-५-४ की रात को घर में देखा ?

नगीना—जी हाँ ।

वकील—क्या ? मैं पूछ सकता हूँ कि रात को कितने बजे होंगे ?

नगीना—मेरे पास घड़ी नहीं थी । अन्दाज रात के करीब बारह बजे होंगे ।

वकील—मिस नगीना । आप ने अपने पति के अलावा किसी और को देखा ?

नगीना—जी हाँ ।

वकील—कौन था वो, आपने पहचाना तो होगा ?

नगीना—मैं पहचान न सकी, पर उन लोगों की वेशभूषा से और बातचीत से मुझे महसूस हुआ कि वे लोग क्रिमनल (खूनी) थे ।

(सुनते ही सारे कोर्ट में हलचल पैदा हो जाती है लोग धीरे-धीरे आपस में बोलने लगते हैं।

जज—आर्डर, आर्डर। (कोर्ट में शान्त वातावरण हो जाता है)

वकील—मिस नगीना ! क्या आप बता सकती हैं कि वो क्रिमनल कितने आदमी रहें होंगे ?

नगीना—वकिल साहब। वो पाँच थे।

वकील—आप ने अपने पति को क्रिमनल से बातें करते देखा ?

नगीना—जी हाँ ! देखा ही नहीं सुना भी।

वकील—क्या सुना आपने ?

नगीना—मेरे पति एक क्रिमनल से कह रहे थे कि मैं श्याम को मारूँगा। तुम लोग आज रात को हो दिनेश, शंभू, सलीम को मार दो।

(बातें सुनते हुए सारे कोर्ट में हलचल पैदा हो जाती है।)

जज—आर्डर, आर्डर। (कोर्ट शान्त हो जाता है)

वकील—मिस नगीना जी। आपके पति का खून कैसे हुआ ?

नगीना—जिस वक्त मैं सोयी थी, उस समय मेरे पति कमरे में सूटकेश लेने आये। जब वो सूटकेश से पिस्तौल निकालकर क्रिमनल को दे रहे थे उस समय तक मेरे जगे हुए का-उन्हें पता नहीं चला। मैं धीरे से आगे बढ़ते हुए दरवाजे की ओट से झाँकने लगी। जब दो पिस्तौल क्रिमनल को देकर वापस कर दिए उस समय उनकी नजर मुझ पर पड़ी और वो चौंके ? घबड़ाकर मुझे जाने को कहा, पर मैं जाने से इन्कार कर गयी। मेरे लाख समझाने पर भी वो श्याम को गोली मारने की बात कर ही रहे थे। मैंने उनका पाँव पकड़ा फिर वो भी न माने और मुझे अपने पाँव से ढकेल दिया। जब वो कुछ आगे बढ़े तो मैं दौड़ी और उनका पिस्तौल छीनने की कोशिश की। इसी छीना झपटी में उन्हें गोली लग गयी।

वकील—माई लार्ड। मिस नगीना जी ने जान बूझकर अपने पति का खून किया, इसका गवाह मि० ललन है। मैं अ[illegible]से दरख्वास्त

करता हूँ कि मि० ललन को अदालत में हाजिर होने इजाजत दीया जाय।

जज—मि० ललन को अदालत में हाजिर किया जाय।

अदालत के वरांडे से एक पुलिस आवाज देती है—मि० ललन अदालत में हाजिर हों—।

(मि० ललन अदालत में हाजिर होता है।)

वकील—(जज के नजदीक से गीता लाकर) मि० ललन। आप गीता पर हाथ रख कर कहिए, मैं जो भी कहूँगा सच कहूँगा, सच के सिवा कुछ नहीं कहूँगा।

ललन—(गीता पर हाथ रखकर) मैं जो भी कहूँगा सच कहूंगा के सच के सिवा कुछ नहीं कहूँगा।

(वकील गीता वापस कर)

वकील—मि० ललन ! आपने मि० शैलेन्द्र का खून होते देखा ?

ललन—मैं अपने कमरे में सोया था। रूक जाइए, नहीं तो गोली मार दूँगी की आवाज मेरे कानों में सुनाई पड़ी। मैं जागा और अपना टार्च लिए घर से बाहर निकला तो हमने देखा कि मिस नगीना के हाथ में पिस्तौल है। मिस नगीना के धमकी देने के बावजूद भी मि० शैलेन्द्र जी कदम बढ़ाते रहे। दो ही कदम बढ़ाये होंगे कि मिस नगीना ने गोली मार दी।

वकील—(ललन से) आप जा सकते हैं।

(ललन वापस अपनी स्थान पर बैठ जाता है।)

वकील—(जज से) माई लार्ड। मि० लालन के बयान से स्पष्ट-साबित होता है कि मि० शैलेन्द्र का खून मिस नगीना ने ही किया।

जज—मिस नगीना। आपका कोई वकील है। अदालात इस केस के दरम्यान वकालत करने की इजाजत देती है।

(श्याम खड़ा हो जाता है। सारे कोर्ट के व्यक्ति चौंध हो जाते है। श्याम फ़ाइल महसूइल लिए जज के समीप जाकर)

वकील—माई लार्ड। मैं अदालत से दरख्वास करता हूँ कि ललन को अदालत में एक बार और हाजिर किया जाय।

ललन—अदालत मि० ललन को हाजिर होने की इजाजत देती है।

(ललन पुनः कटघरे में हाजिर होता है)

श्याम—मि० ललन। आप जिस कमरे में सोये थे उस कमरे का किवाड़ा खुला हुआ था ?

ललन—नहीं।

श्याम—मि० ललन। जिस वक्त आपने किवाड़ा खोला होगा आपके परिवार वाले लोग जगे होंगे ?

ललन—नहीं।

श्याम—हाँ तो मि० ललन। आप यह तो बताइए कि जब आप किवाड़ा खोलकर टार्च लिए मिस नगीना को अपने पति का खून करते देखा, उस वक्त आपने चिल्लाया तो होगा ?

ललन—नहीं,

श्याम—(कड़ककर) माइ लार्ड ! मि० ललन के बयान से स्पष्ट साबित होता है कि मि० शैलेन्द्र का खून होते मि० ललन ने नहीं देखा।

श्याम—मि० ललन। मि० शैलेन्द्र जी के खून होने के बाद आप अपने कमरेमें गये तो अपने परिवार वालों से यह दुःखद घटना अवश्य कही होगी ?

ललन—(माथे का पसीना पोंछते हुए) नहीं, नहीं, मैं कुछ नहीं जानता। (बिल्कुल घबड़ाया हुआ जैसा है।)

श्याम—माइ लार्ड ! मि० ललन के बयान से साफ॰ जाहिर होता है कि सिखायो गयी बातों का स्पष्टीकरण है।

जज—अदालत ! मिस नगीना को अपने पति स्व० शैलेन्द्र की हत्या का कोई सबूत न पाकर उसे रिहा करती है।

श्याम—माई लार्ड। एक और खास बात मुझे अदालत से दरख्वास्त करनी है कि मि० ललन को झूठे गवाह के सिलसिले में सजा मिलनी चाहिए।

जज—अदालत ! मि० ललन को झूठी गवाही देने पर उसे छह महीने की सख्त सजा देती है। (पटाक्षेप)

अंक चौथा **दृश्य तीसरा**

(स्थान—गाँव । श्याम, दिनेश, शंभू, जग्गू, जीतू, सलीम, नगीना, गाँवबासी सब उत्साह पूर्वक खड़े हैं ।)

(राम-रामू का प्रवेश)

राम—(श्याम का पैर छूने की कोशिश करता है पर श्याम हटते हुए उठाकर गले लगा लेता है)

राम—श्याम, मुझे माफ दो । मैं इन अन्यायी, अत्याचारी, भ्रष्टाचारी पंचों की बात में पड़कर अपने परिवार में फूट डालने पर मजबूर कर दिया गया ।

श्याम—भैया, गल्ती का पश्चाताप करना, सजा पाने के बराबर होता है ।

रामू—(श्याम का पैर छूने की कोशिश करता है पर श्याम रामू को भी गले लगा लेता हैं ।)

रामू—मुझे भी माफ कर दो श्याम । मैं आज तक इन अत्याचारी पंचों के दलाली का पार्ट अदा करता रहा। इन पंचों के बहकावे में पड़कर कितने घरों को फोड़कर तबाह कर डाला । अब मैं सतर्क हो गया हूँ । अब इन पंचों की दलाली मैं जीतेजी कभी नहीं करूँगा । चाहे मेरी लाश पर होकर ये क्यों न गुजरें ।

रामू—इन्कलाब ।
सब—जिन्दाबाद
रामू—जन्मत संग्रह में
सब—बहुदलीय को जितायेंगे ।
रामू—घर घर से आती आवाज ।
सब—बहुदलीय व्यवस्था जिन्दाबाद
रामू—शहीदों का सपना ।
सब—पूरा करेंगे । (पटाक्षेप)



●

महसा

ीने

ना,

हुए

री
पर

बर

को

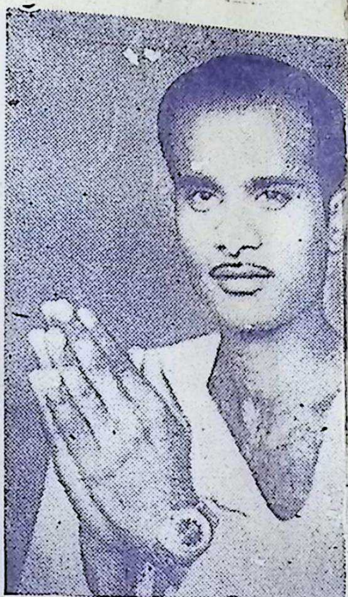
चों
में
हो
ा।

हृदयनारायण का

जल्द प्रकाशित होने वाला

महान्

क्रान्तिकारी उपन्यास



"बगावत"

अवश्य पढ़ें



प्रकाशक :

अशोक कुमार उपाध्याय

सरलाही (नेपाल)

